Fortnightly per copy Rs. 4/-

03rd February 2023

ओ३म्

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org

Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

आदर्श गुरु शिष्य और आदर्श गुरु-दक्षिणा

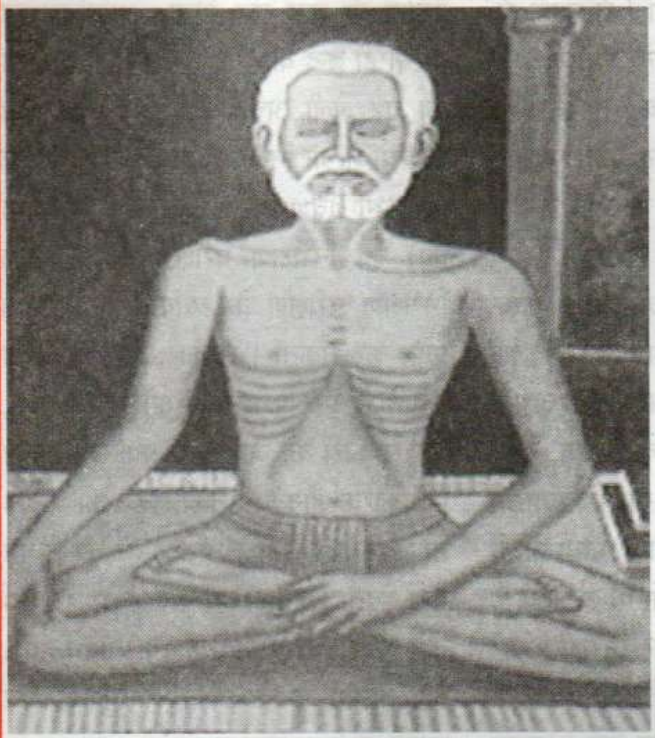

गुरु-दक्षिणा के रूप में 'देश के लिए जीवन अर्पित कर दो' गुरु विरजानन्दजी की निराली माँग : शिष्य द्वारा विनयपूर्वक स्वीकृति-

इस घटना के थोड़े दिन पश्चात् विद्या समाप्त की और आधा सेर लोंग जो दंडी जी को अत्यन्त प्रिय थे उनको भेंट किए और जाने की आज्ञा माँगी । विरजानन्दजी मनुष्य के बड़े पारखी थे । तीन वर्ष के समय में उन्होंने दयानन्द जी को व्याकरण के अष्टाध्यायी और महाभाष्य और वेदान्त सूत्र और इनसे अतिरिक्त भी जो कुछ विद्याकोष उनके पास था सब उन्हें सोंप दिया था और ऋषिकृत ग्रन्थों से उन्होंने जो बातें निश्चित की हुई थीं वे सभी उनके मस्तिष्क में डाल दीं । उनका विचार था कि हमारे शिष्यों में से हमारे काम को यदि कुछ करेगा तो दयानन्द ही करेगा । उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न होकर विद्या समाप्ति की सफलता की गुरु दक्षिणा मांगी । दयानन्द ने निवेदन किया कि जो आपकी आज्ञा हो उपस्थित हूँ । तब दंडी जी ने कहा कि १) देश का उपकार करो, २) सत्य शास्त्रों का उद्धार करो । ३) मतमतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और ४) वैदिक धर्म का प्रचार करो । स्वामी जी ने अत्यधिक क्षमा प्रार्थना करते हुए और बहुत विनय पूर्वक इसको स्वीकार किया और वहाँ से विदा हो गए । गुरु जी ने आशीर्वाद दिया और चलते हुए एक अमूल्य बात और भी कह दी कि **मनुष्यकृत ग्रन्थों में परमेश्वर और ऋषियों की निन्दा है और ऋषिकृत में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना ।**

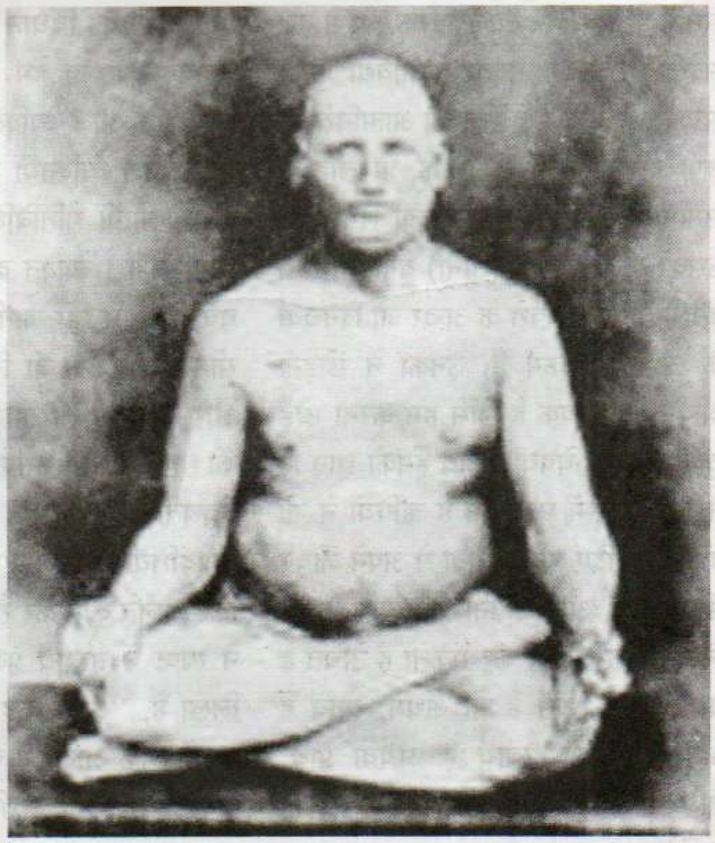

आत्मनिरीक्षण

-भाव स्व. आचार्य ज्ञानेश्वर

आत्मनिरीक्षण शब्द छोटा-सा है और सरल भी है जो आपने सुन भी रखा होगा। लेकिन इन शब्दों के अनुरूप व्यक्ति अपना क्रियाकलाप नहीं करता, परिणाम यह निकलता है कि व्यक्ति का जीवन उन्नत नहीं हो पाता। आत्मनिरीक्षण का अर्थ अपने आपको देखना, अपने जीवन की ओर देखना, अपने व्यवहारों को देखना, अपनी वाणी को देखना, अपने विचारों को देखना, अपने संस्कारों को देखना और इन सब की तुलना वेद के साथ, ऋषियों के साथ, आप्तपुरुषों के साथ, गुरु, आचार्यों के आदेशों के साथ करके पता लगाना कि कितना भेद है, कितना अन्तर है। इस क्रिया का नाम है आत्मनिरीक्षण।

जीवन की उन्नति का एक बड़ा हेतु है। यह विशेषकर आध्यात्मिक क्षेत्र में जिसे हम अमोघ शस्त्र भी कह सकते हैं। यह पारसमणि के समान है जो आपने सुन रखा होगा। वास्तव में पारसमणि कोई वस्तु नहीं होती, परन्तु सुनते हैं कि पारसमणि जिसके साथ लगा देते हैं वह सोना बन जाता है। यह जो आत्मनिरीक्षण है वह पारसमणि के समान है। इसे हम आलंकारिक रूप में कह सकते हैं। जन्म-जन्मान्तर से अविद्या जनित संस्कारों से युक्त हुए चित्त को आत्मनिरीक्षण रूपी पारसमणि में जोड़ते हैं जो लौह के समान जंग लगने वाला कच्चा लगता है, उसको कुन्दन समान (सोना) बना देता है। हमारी वैदिक परम्परा के अन्दर जो दिनचर्या के अपरिहार्य कर्म हैं, उनका न छोड़ना अत्यन्त आवश्यक है जिसे हम करना छोड़ चुके हैं। इस विषय में अब हमको ज्ञान ही नहीं है। उसमें एक कर्म है ऋषियों ने जो हमें निर्देश दिए उन्हें सूक्ष्मता से अपने जीवन में उतारना और अपनी गतिविधियों पर निरीक्षण करें कि मैं कर सकता हूँ उचित है या अनुचित, धर्म है या अधर्म, न्याय है अथवा अन्याय, स्वार्थ है अथवा प्रार्थ, लाभकारक, है या हानिकारक, सुखदाई अथवा दुःखदाई है। वेद की आज्ञा या अवज्ञा, हितकारी कर्म है अथवा निषिद्ध कर्म है। इस दृष्टिकोण से अपने आप का निरीक्षण करें। परमपिता परमात्मा ने भी वेद के अन्दर स्पष्ट शब्दों में कहा है- **"कृत्य स्मर, कृतो कृतम स्मर"** कृतो कहते हैं कर्म करने वाला जीवात्मा को। वेद कहत है कि हे कर्म करने वाले जीवात्मा ! तू वाणी से, मन से, शरीर से, जिन-जिन कर्मों को कर रहा है, उन सारे कर्मों का तू निरीक्षण परीक्षण कर, अवलोकन कर, जाँच-पड़ताल कर कि तू ठीक कर रहा है अथवा नहीं, प्रामाणिक है अथवा नहीं। हमारा हर कार्य प्रामाणिक होना चाहिए। ऋषियों ने कहा- प्रत्येक दिन व्यक्ति निरीक्षण करके देखे कि मेरा जो जीवन है वह वेद अनुकूल है अथवा नहीं, ऋषियों के अनुकूल है कि नहीं, आप्तपुरुषों के अनुकूल है या नहीं, शास्त्रों के अनुकूल है अथवा नहीं। माता-पिता, गुरु, आचार्य, आदर्श पुरुषों के अनुकूल है अथवा नहीं। इन सब पर निरीक्षण करें और जो-जो त्रुटियाँ, भूलें, द्वेष, कमियां दिखाई देती है उनका सुधार करें। प्रत्येक दिन करने का विधान है। यह कर्म इतना महत्वपूर्ण है जो हम आज बिल्कुल भुला चुके हैं। आज व्यक्ति की स्थिति यह है (अधिकांश व्यक्तियों की) कि आंख बन्द करके अपनी गतिविधियों को जानने को तैयार नहीं। व्यक्ति की आंख बन्द करके घबराहट शुरू हो जाती है, क्योंकि कुकर्म सामने आते हैं, जो किए हैं, कर रहा है और जो करने जा रहा है। इन तीनों प्रकार की दुष्प्रवृत्तियाँ उसके सामने आती है, घबराता है और छोड़ देता है। इस सब दुष्प्रवृत्तियों से उसे स्पष्ट प्रतीति होती है कि मैं गलत काम कर रहा हूँ। ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा है, "आंख बन्द करते ही पता चल जाता है कि आज जो चोरी कर दी है, झूठ बोल दिया है, गलत विचार उठा दिए है, निन्दा कर दी है, हानि कर दी है, अपमान कर दिया है, आरोप लगा दिए हैं, यह सब झूठ है, अब पता चल जाता है।" इसलिए यह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति अपने आपको ज्यादा बुद्धिमान व्यक्ति अपने आपको ज्यादा बुद्धिमान समझता है। आंख बन्द कर देने से जो उल्टे कर्म सामने आते हैं, इसलिए देखना ही बन्द कर दिया, आत्मनिरीक्षण करना ही बन्द कर दिया। परन्तु साधकगण की यह शैली अच्छी नहीं है। ईश्वर ने/ ऋषियों ने जो निर्देश दिया है जीवन के हर एक अंग (विशेषकर आध्यात्मिक व्यक्तियों को) का निरीक्षण परीक्षण करे। बिना निरीक्षण परीक्षण के व्यक्ति उन्नति नहीं प्राप्त कर सकता। संस्कार जो व्यक्ति को नचाते हैं और कुकर्म की ओर ले जाते हैं, उन संस्कारों को जान नहीं सकता। इनको हानिकारक जानकर उनको रोकने की भावना नहीं बनती। उनको नष्ट करने का उपाय नहीं ढूंढता। उनको दबाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करता, तपस्या नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि आज का पुरुष जिस प्रकार या जिस स्तर में जीवन चला रहा है, उसे मान लेता है कि वह ठीक है। ऑलराइट है। ऐसा व्यक्ति अपने आपको मानता है कि जो मैं बोल रहा हूँ, विचार रहा हूँ कार्य कर रहा हूँ, वह ठीक है, जिस में सुधार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त क्रोधी होकर व्यवहार करता है और अपने आपको सब्ज मानता है। पचासों बार दिन में झूठ बोलता है, परन्तु अपने आपको ठीक मानता है। हिंसा, राग, द्वेष, चुगली, निन्दा का भरपेट प्रयोग करता है फिर भी अपने आपको ठीक मानता है। इन्द्रियों के विषय में अत्यन्त आसक्त है, लिप्त है, तृष्णायुक्त है, फिर भी अपने आपको ठीक मानता है। जीवन में आलस्य, प्रमाद घर किए बैठे है फिर भी अपने आपको ठीक मानता है। अब जो व्यक्ति

अपने जीवन में दोषों के जानने के लिए तैयार नहीं वह उन दोषों को हटाएगा क्या, उपाय कैसे ढूंढेगा। तपस्या कैसे करेगा। जो जान ही नहीं पा रहा वह त्याग क्या करेगा। ऐसे में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि अपने जीवन के अन्दर जो अपने व्यवहार, उल्टी वाणी है, कुसंस्कार है, उनको जानने का प्रयास करे।

साधाकगण जीवन को उन्नत बनाने के लिए कोई बहुत बड़े धन की आवश्यकता नहीं है। क्या हमारे पास १०-२०-५० लाख रुपया होगा तभी हमारा जीवन महान् बनेगा। जीवन को उन्नत, श्रेष्ठ बनाने के लिए किसी व्याकारण, उपनिषद् या वेद के सारे ग्रन्थों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं। सब ग्रन्थ कोई पढ़ नहीं सकता। जीवन को उन्नत/पवित्र/निर्मल और निर्भीक बनाने के लिए कोई बड़े बल की आवश्यकता नहीं कि मैं दारासिंह या गामा पहलवान बनूँगा तो जीवन को उत्कृष्ट कर सकूँगा। आध्यात्मिक जीवन में यह भी शर्त नहीं है कि सारे वेद पढ़ूँगा तो श्रेष्ठ जीवन होगा ऐसा नहीं है। एक धार्मिक पवित्र व्यक्ति/सन्तुष्ट व्यक्ति/आनन्दित व्यक्ति/एक तृप्त व्यक्ति तो सामान्य यम, नियमों के आचरण को ठीक प्रकार जानकर, आचरण करके, समझ कर चलने से एक आदर्श व्यक्ति बन सकता है। एक शूद्र को भी आर्य कहते हैं, चाहे वह अंगूठा छाप हो या पढ़ना-लिखाना न आता हो, उसको भी आर्य कहा गया है। उसको शान्ति मिलती है, वह भी निर्भीक जीवन जी सकता है, वह भी प्रसन्न सन्तुष्ट होता है, क्योंकि उसके जीवन के अन्दर छल-कपट नहीं, अन्याय नहीं, चोरी नहीं, पक्षपात नहीं, हिंसा नहीं। यह ठीक है कि ब्राह्मण को उसके वेदों के पढ़ने-लिखने या ऊँचे विज्ञान के कारण, उसके उत्कृष्ट ज्ञान के कारण, उसको एक विशेष आनन्द मिलता है, इस बात को छोड़ दीजिए लेकिन जीवन के अन्दर चाहे शूद्र हो तो भी यदि यम-नियम का साधारणतया पालन करता है तो उसके जीवन में शान्ति, प्रसन्नता, निर्भीकता, एकाग्रता, सन्तोष होगा, स्वतन्त्रता होगी। लेकिन आज सामान्य व्यक्ति के जीवन के अन्दर भी इन बातों को छोड़ दीजिए जो उत्कृष्ट किस्म के जीवन है, जिनके पास धन-सम्पत्ति है, जिनके बाजुओं में बल है, जिनके पास प्रतिष्ठा है, जिनके पास मान-सम्मान है, जो साधनों के अन्दर सम्पन्न हैं, उन व्यक्तियों के अन्दर भी वह निर्भीकता, शान्ति, प्रसन्नता, आनन्द, तृप्ति, सन्तोष नहीं है। इसका कारण है अन्तःकरण का अपवित्र होना। हम इनका निरीक्षण-परीक्षण नहीं करते। साधरणतया हम जानते हैं कि हमारे दो तरह के जीवन हैं, एक आन्तरिक दूसरा बाह्य। बाह्य जीवन तो हम दूसरों के जान लेते हैं, उसका कपड़ा ऐसा है, उसका मकान ऐसा है, उसकी भाषा ऐसी है, उसकी गाड़ी ऐसी है, उसका बैंक बैंलेन्स ऐसा है, उसके पास डिग्री इतनी है, उसके पास जैक कितना है-यह सब बाह्य जीवन है। इसके अतिरिक्त एक आन्तरिक जीवन होता है, जिसको ईश्वर ही जानता है अथवा वह व्यक्ति स्वयं ही जानता है। हमारे अन्दर आज कितनी बार भय, मोह, ईर्ष्या की भावना उत्पन्न हुई हम स्वयं ही जानते हैं। पति के मन की बात पत्नी नहीं जान सकती और पत्नी के मन की बात पति नहीं जान सकता। बाप बेटे की बात नहीं जानता, भाई भाई की बात नहीं जान सकता कि मेरे भाई के मन में कितने वितर्क उत्पन्न हुए और न हम ही जान सकते हैं। बाह्य जीवन की अपेक्षा आन्तरिक जीवन का अधिक महत्त्व है। आज हमारा बाह्य जीवन कितना सुदृढ़ है, सुन्दर है, सुगन्धित है, कितना अनुशासित है, सम्पन्न है, आकर्षक है, दुर्गन्धित है, कमजोर है, यह स्थिति है हमारी, दुर्बल है, अनुशासनहीन हैं, रोगयुक्त हैं, यह तत्काल पता चल जाता है दो मिनट में-अन्दर कैसा हूँ और बाहर कैसा ?

आध्यात्मिकता क्या है और योगाभ्यास क्या है, धार्मिकता क्या है, अन्दर और बाहर का जीवन एक प्रकार कर देना। जिस भी व्यक्ति का जीवन अन्दर और बाहर का भिन्न है वह दुष्ट माना गया है, दुरात्मा माना गया है। **मनसि अन्यत्र वर्चसि अन्यत्र कर्माणि दूर आत्मनो**। जो दुष्ट और खराब आदमी है, वह अनार्य है, पापी है, अधर्मी है-कुछ भी कह लीजिए। ऐसे व्यक्तियों को दुष्ट कहा गया है हमारे शास्त्रों में। इसके विपरीत **मनसि एकम्, वर्चसि एकम्, कर्माणि एकम् महात्मनम्**। जिस व्यक्ति के मन में वाणी में शरीर में एक ही चीज है-जैसा मन विचारता है, वैसा ही बोलता है और वैसा की करता है, उसको महात्मा कहा गया है, उत्तम कहा गया है, आर्य कहा गया है, धार्मिक कहा गया है, ईश्वर-भक्त कहा गया है। कुछ भी कह लीजिए यह भेद है। आत्मनिरीक्षण जो है यह व्यक्ति को प्रतीति कराता है कि बहरी जीवन औरआन्तरिक जीवन का। जैसे हाथी के दान्त दिखाने में और खाने में और वैसे ही हमारे जीने का व्यवहार हो गया है।

महानुभाव ! जब व्यक्ति आध्यात्मिक जगत् में आता है और धीरे-धीरे प्रगति करता है तो जान पाता है कि ईश्वर मुझे हर जगह देख, सुन, जान रहा है, तो अपने किए कर्मों पर विचार करना शुरू करता है। विचारता है कि पिछले १०-२०-३० वर्षों में मैं क्या कर्म करता रहा हूँ तब किए हुए कर्म सामने आते हैं और उन किए हुए काले कर्मों को सोच-सोच कर रोता है, घबराता है। साधकगण ! आत्मनिरीक्षण किए बिना दोषों का पता नहीं चलता और आगे के दोष रुकते नहीं। जब पता चलता है कि उल्टे किए हुए कर्मों का फल उल्टा ही मिलेगा, दण्ड मिलेगा, दुःख मिलेगा, तो ऐसे में आगे के कुकर्मों में ब्रेक लगेगी। जीवन में सुधार लाने और परमपिता परमेश्वर के समीप जाने का यही एक रामबाण तरीका है। आगे ही प्रक्रिया को जीवन में अपनाएँ और प्रेयमार्ग को छोड़कर श्रेयमार्ग को अपनाकर जीवन का कल्याण करें।

सुखी रहने के उपाय

-विरजानन्द दैवकरणि

भारत के दैनिक समाचार पत्रों को पढ़ने से ज्ञात होता रहता है कि जनता में अज्ञान अविद्या राग, द्वेष, मूर्खता आदि के कारण अनेक प्रकार के दुःख प्राप्त होते रहते हैं। इन दुःखों के कारण अनेक समस्या उत्पन्न होती रहती हैं। यहां पारिवारिक दुःखों का कारण और उनके निवारण हेतु विचार किया जा रहा है ! परिवारों में माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी तथा नाश्तेदारों में अज्ञान तथा सहनशक्ति और धन का अभाव लोभ लालच तथा स्वार्थपूर्ति के कारण अनेक प्रकार के दुःख, ईष्या, द्वेष आदि का बाहुल्य देखने में आता है ! संयुक्त परिवार की प्रथा प्रायः करके समाप्त होती जा रही है तथा एकल-एकाकी परिवार की परम्परा बलवती हो रही है युवा गृहस्थ आजीविका हेतु ग्रामीण वातावरण को छोड़कर नगरों की शरण में जाने लग रहे हैं। उनके वृद्ध माता-पिता ग्राम में रहकर ही जैसे-तैसे गुजारा करते हैं जिस भावना से सन्तान उत्पन्न की थी, उस भावना का अभाव उन्हें शारीरिक और मानसिक दृष्टि से पीड़ित करता रहता है। नागरिक जीवन में मंहगाई के कारण छोटे परिवार का ही निर्वाह कठिनता से चलता है ऐसी परिस्थिति में युवा लोग अपने माता-पिता को शहर में रखने में असुविधा मानते हैं और ग्रामीण जीवन के अभ्यासी वृद्ध माता पिता भी लम्बे समय तक नगर में नहीं रह पाते, किन्तु पुत्र मोह के कारण ग्राम और नगर के मध्य जाने-आने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

ग्राम के मकान और भूमि आदि सम्पत्ति के बटवारे में भी भाई बहनों में विवाद और अस्तोष बढ़ जाता है। युवा जन माता-पिता की अपेक्षा पत्नी तथा बच्चों की और अधिक ध्यान देते हैं। ऐसे समय में सास अपनिज्ञी वहू को ही बुराई देने लग जाती है। कोई भी स्त्री अपनी पुत्री और पुत्र-वधू को यदि समदृष्टि देखेगी तो कलह कभी भी नहीं हो सकता। संयुक्त परिवार के अभाव में नए बच्चे नाऊ-ताई, चाचा-चाची, दादा-दादी जैसे रिश्तों की पहचान और आवश्यकता ही अनुभव नहीं करते। उन्हें अन्कल-आन्टी इन दो शब्दों की जानकारी रहती है। एकल परिवार के कारण भाई-भाई तथा बहन-भाई के दूर रहने के कारण आत्मीयता का अभाव हो जाता है। शहर में रहने वाले पति-पत्नी यदि दोनों ही नौकरी करते हों। तो बच्चों की देखभाल पूरी तरह नहीं हो पाती और वच्चे अनियन्त्रित होकर समाज में व्याप्त दुर्गुणों को सीख लेते हैं। शहरी व्यक्ति के घर में कोई अतिथि आ जाता है तो वह भी भारी लगने लग जाता है। उसकी देखभाल के लिए गृहस्थ व्यक्ति को अपने कई कार्यों में व्यवधान उठाना पड़ता है। यदि आर्थिक अति स्थिति सीमित है तो उसो और भी अधिक समस्या का सामना करना पड जाता है और पति पत्नी में विवाद होकर चिड़चिड़ापन आ जाता है। पति पत्नी के स्वभाव में यदि प्रतिकूलता हो तो उसका परिणाम अति दुःखदाई हो जाता है। या तो रोज-रोज कलह होता है या तलाक लेना पडता है, अथवा कोई एक आत्महत्या का मार्ग अपना लेता है। कभी कोई किसी को मार देता है। मादक द्रव्यों का सेवन भी इनमें सहायक हो जाता है। एक दूसरे के चरित्र पर सन्देह भी होना कलह उत्पन्न करता है।

इस प्रकार की अनेक समस्याओं के निराकरण हेतु वेद का आदेश मान लिया जाए तो सभी प्रकार के कष्टों का निवारण हो सकता है। वेद कहता है :-

अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जात मिवाध्नया।
अनुव्रतः पितुः पुत्रों माता भवतु समंना ॥
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा बाचं वदत भद्रया ॥

-अतर्ववेद ३.३०.१.३

सभी लोग परस्पर ऐसा स्नेह, प्यार, प्रेम करें जैसे तुरत के उत्पन्न वछड़े से गाय प्रेम करती है। पुत्र पिता के सद्व्यवहारानुकूल रहे तथा माता की भावने के अनुकूल वर्ताव करे। पत्नी अपने पति के लिए शहद के समान मीठी और शान्तिप्रद वाणी वोले। भाई भाई से द्वेष न करे, बहन बहन से द्वेप न करे और बहन भाई भी परस्पर प्रीतियुक्त रहें। एक मन वाले होकर कल्याणकारिणी वाणी का प्रयोग करें।

महाभारत शान्तिपर्व १३८.८६ **में लिखा है**

सा भार्या या प्रियं व्रूते। वही पत्नी अच्छी होती है जो प्रिय वचन वोले। कर्कशवाणी बोलने वाली पत्नी से परिवार में अशान्ति और कलह का वातावरण बना रहता है। इसीलिए महाभारत उद्योगपर्व २६.६ में कहा है-**रूक्षां वाचं रुषतीं वर्जयीत**। कठोर और रूखी वाणीं का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे विपरीत के लिए कहा है-**मार्या श्रेष्ठतमः सखा**। पत्नी सवसे उत्तम मित्र होती है। कटु वाणी का घाव कभी नहीं भरता, वह सदा हृदय में चुभता रहता है।

अतः वेदानुकूल आचरण करके व्यक्ति को सदा सुख प्राप्ति हेतु यत्न करते रहना चाहिए। यह भी धयान रहे कि सदा सुख और सदा दुःख किसी को नहीं रहते। ये रथ के पहिए के अरों की भान्ति एक दूसरे के आगे पीछे आते जाते रहते हैं। अतः घवराना नहीं चाहिए। धैर्य धारण करने से सुख-दुःख में समान रहा जा सकता है, तभी व्यक्ति को सुख और सन्तोष मिल सकता है। अतः आज सामाजिक जीवन को मुखमय बनाने की महती आवश्यकता है। इसका आधार है वैदिक शिक्षा के अनुकूल चलना।

आध्यात्मिक

सुखी जीवन का आधार सन्ध्योपासना

-मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य जीवन परमात्मा से हम सबको अपनी आत्मा और शरीर की उन्नति के लिए मिला है । आत्मा की उन्नति का साधन सत्य ज्ञान की प्राप्ति सहित उसे अनुरूप आचरण करना है । ईश्वर के ध्यान, चिन्तन, उपासना को सन्ध्या कहा जाता है । सन्ध्या का अर्थ है ईश्वर का भली भान्ति ध्यान करना है । सन्ध्या के लिए यह आवश्यक है कि हम ईश्वर, जीवात्मा सहित इस सृष्टि को भली प्रकार से जानें । ईश्वर व आत्मा का ज्ञान हमें सृष्टि के पदार्थों का त्यागपूर्वक भोग करने की शिक्षा देता है और मनुष्य में वैराग्य भाव को उत्पन्न करता है । विवेकपूर्वक विचार करने पर मनुष्य यह अनुभव करता है कि जीवन का पर्याप्त समय ईश्वर व आत्मा के चिन्तन, ध्यान, विचार, वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय, अध्ययन व प्रचार आदि में व्यतीत होना चाहिए । महर्षि दयानन्द ने वेद और समस्त वैदिक साहित्य का गहन अध्ययन किया था । उन्हें सभी विषयों का ज्ञान था और इसके साथ वह कर्म-फल सिद्धान्त को भली प्रकार से जानते थे । मनुष्य को अपने किए शुभ व अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है । इस सिद्धान्त से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य यदि अशुभ या पाप कर्म करेगा तो ईश्वर उसे उन कर्मों का दण्ड अवश्य देगा । ईश्वर सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी होने से सभी जीवों के सभी कर्मों का साक्षी व द्रष्टा है । वह किसी मनुष्य के किसी कर्म को कदापि भूलता नहीं है । यही कारण है कि हमारे ऋषि व विद्वान अपना जीवन ईश्वर प्राप्ति की साधना, वेदों के शिक्षण व प्रचार तथा यज्ञादि सद्कर्मों में व्यतीत करते थे । वेदों के अध्ययन व चिन्तन मनन से भी यही स्पष्ट होता है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति कर ईश्वरोपासना व यज्ञादि कर्मों को करना हैं इससे मनुष्य जीवन का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति कर ईश्वरोपासना व यज्ञादि कर्मों को करना है । इससे मनुष्य शुभ कर्मों की वृद्धि तथा पूर्व किए कर्मों के फलों का भोग कर दुष्ट-कर्मों के बन्धन से मुक्त होकर अपने जीवन को श्रेष्ठ व उत्तम बना सकता है । ऐसा करने से मनुष्य जन्म व मरण के क्लेश व दुःखो से मुक्ति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति में अग्रसर होता है । जीवात्माओं को सुख देने, उनका कल्याण करने व उन्हें जन्म-मरण से छुटाकर मोक्ष प्रदान करने के लिए ही ईश्वर ने सृष्टि की आदि में वेदों का ज्ञान दिया था । ऋषि दयानन्द वेदों के मन्त्र-दृष्टा ऋषि व विद्वान थे । उन्होंने ईश्वर व वेदों के ज्ञान का प्रत्यक्ष कर वेदों को ईश्वरीय ज्ञान व सब सत्य विद्याओं की पुस्तक घोषित किया है । वेदों का अध्येता भी वेदों के पदों, पदार्थ, भाषा तथा मन्त्रों में निहित ज्ञान को जानकर यह अनुभव करता है कि यह मानवरचित ज्ञान न होकर ईश्वरीय ज्ञान ही है । इसी कारण पूर्व ऋषियों व ऋषि दयानन्द ने वेदों का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सब आर्यों अर्थात् मनुष्य मात्र का परम धर्म अर्थात् अनिवार्य कर्त्तव्य माना है ।

ऋषि दयानन्द ने वेद एवं ऋषियों के साहित्य के अनुसार ईश्वर की उपासना को सभी मनुष्यों का प्रमुख कर्त्तव्य मानकर पन्चमहायज्ञ विधि पुस्तक का निर्माण किया है और उसमें ईश्वर के ध्यान व चिन्तन सहित उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना हेतु 'सन्ध्या' को प्रथम स्थान दिया है । उनके अनुसार ईश्वर चिन्तन व सन्ध्या आदि करने से मनुष्य की आत्मा के मल व दोष अर्थात् दुर्गुण, दुव्यर्सन एवं दुःख दूर हो जाते हैं और इनका स्थान कल्याणकारी गुण, कर्म व स्वभाव लेते हैं जिनसे मनुष्य का जीवन श्रेष्ठ, सफल व उत्तम वनता है । ऋषि दयानन्द ने सन्ध्या की जो विधि लिखी है वह मनुष्य को श्रेष्ठ ज्ञान से युक्त कराने के साथ ईश्वर व आत्मा का ज्ञान भी कराती है एवं साथ ही ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हुए जीवन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण पदार्थ स्वस्थ शरीर, ऐश्वर्य, सुख, वल, यश, दीर्घायु आदि पदार्थों को भी प्राप्त कराती है । यह पदार्थ हम सन्सार में धन का व्यय करके प्राप्त नहीं कर सकते । इससे यह सिद्ध होता है कि धन का स्थान ईश्वर व जीवात्मा के ज्ञान ईश्वरोपासना आदि कर्त्तव्य, वेद आदि ग्रन्थों के स्वाध्याय के वहुत बाद में आता है । मनुष्य का लक्ष्य दुःखों की पूर्णतया निवृत्ति है । मनुष्य के सभी दुःख ईश्वरोपासना एवं शुभ-कर्म आदि के करने से ही दूर होते है । अतः मनुष्य को धर्मानुकूल व्यवसाय आदि के कार्यों को करते हुए ईश्वर की उपासना व यज्ञ आदि कर्मों से विरत नहीं होना चाहिए ।

इस लेख में हम सन्ध्या के उपस्थान प्रकरण के एक मन्त्र का उल्लेख कर उसमें निहित उदात्त व श्रेष्ठ ईश्वर-स्तुति प्रार्थना उपासना को प्रस्तुत कर रहे हैं । इस मन्त्र में ईश्वर से जो वस्तुएं मांगी गई हैं वही मनुष्य की सर्वोत्तम आवश्यकताए व सम्पत्तियां हैं । यह मन्त्र यजुर्वेद ३६/४ है जो कि निम्न है :

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताछुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

इस मन्त्र में कहा गया है कि ब्रह्म अर्थात् ईश्वर सबका द्रष्टा है । वह धार्मिक विद्वानों में सृष्टि के पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्य स्वरूप से वर्तमान रहता है । वह सब जगत् की रचना वा उत्पत्ति करने वाला है । उसी ब्रह्म को हम १०० वर्षों तक देखें । उस ब्रह्म की कृपा की वेदवाणी को हम ऋषियों व विद्वानों से १०० वर्ष तक सुनें । उसी ब्रह्म के वेद वर्णित सत्यस्वरूप का हम अन्य लोगों को उपदेश करें । वह ब्रह्म हम पर कृपा करें जिससे हम किसी के अधीन न होकर पूरी आयु पर्यन्त स्वतन्त्र रहें । उस परमेश्वर की आज्ञापालन और कृपा से हम सौ वर्षों के उपरान्त भी उसकी सृष्टि व कार्यों को देखें, जीवित रहें, वेदों का अध्ययन व श्रवण करें, दूसरों को सुनाएं व स्वतन्त्र रहें । मन्त्र का तात्पर्य है कि रोगरहित स्वस्थ शरीर, दृढ़ इन्द्रिय, शुद्ध मन और

आनन्द से युक्त हमारा आत्मा सदा रहे । एक परमेशवर ही सब मनुष्यों का उपास्यदेव है । जो मनुष्य सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सृष्टिकर्ता ईश्वर को चोड़कर दूसरे की उपासना करता है वह पशु के समान होके सब दिन दुःख भोगता रहता है । इसलिए ईश्वर के प्रेम में मग्न होकर और अपने आत्मा व मन को परमेश्वर में लगाकर परमेश्वर की स्तुति और प्रार्थना सदा करनी चाहिए ।

यह वेदमन्त्र व वेदों के अन्य सभी मन्त्र मानवीय रचनाएं नहीं हैं अपितु ईश्वर का नित्य व नाशरहित ज्ञान है जो सृष्टि की आदि में ईश्वर ने चार ऋषियों के अन्तःकरण में अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से प्रेरणा करके प्रदान किया था । उपर्युक्त मन्त्र में परमात्मा मनुष्यों को मन्त्र के भावों के अनुरूप स्तुति व प्रार्थना करने की प्रेरणा करता है । मनुष्य को दृष्टि की शकति, श्रवण शक्ति, वाक् शक्ति, गन्ध ग्रहण शक्ति व स्पर्श शक्ति आदि ईश्वर से ही प्राप्त होती है । इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद करने व उससे प्रार्थना करने से वह हमारे शरीर सहित इन सभी शक्तियों को १०० वर्ष व अधिक समय तक हमारे शरीर में बनाए रखे, यह प्रार्थना हमें करनी चाहिए । इसके लिए हमें सन्ध्या करते हुए अपने मन को पवित्र रखकर उपर्युक्त मन्त्र का अर्थ सहित एक व अनेक वार उचरण करना है । मनुष्य को उसके शरीर में यह शक्तियां जन्म के समय से परमात्मा से ही प्राप्त हुई हैं और वही इनको स्वस्थ रखने के साथ इन्हें हमारी लम्वी आयु तक निर्दोष रख सकता है । अतः हमें वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते हुए ईश्वर से शरीर, आरोग्य व १०० वर्ष की आयु मांगनी चाहिए । ईश्वर हमारी पात्रता को जानते हैं । जिस प्रकार एक पिता अपने योग्य व पात्र पुत्र को अपनी सभी धन सम्पत्ति सोंप देता है, ऐसा ही अक्षय धन व सम्पत्तियों का स्वामी ईश्वर भी करता हैं वह भी पिता की भांति हमें इन सब सम्पत्तियों को प्रदान करता हैं । इसके लिए हमें अपने मन की पवित्रता के साथ ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करनी ही अपेक्षित है । ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो स्वास्थ्य, ऐश्वर्य व दीर्घायु हो सकते हैं व धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं ।

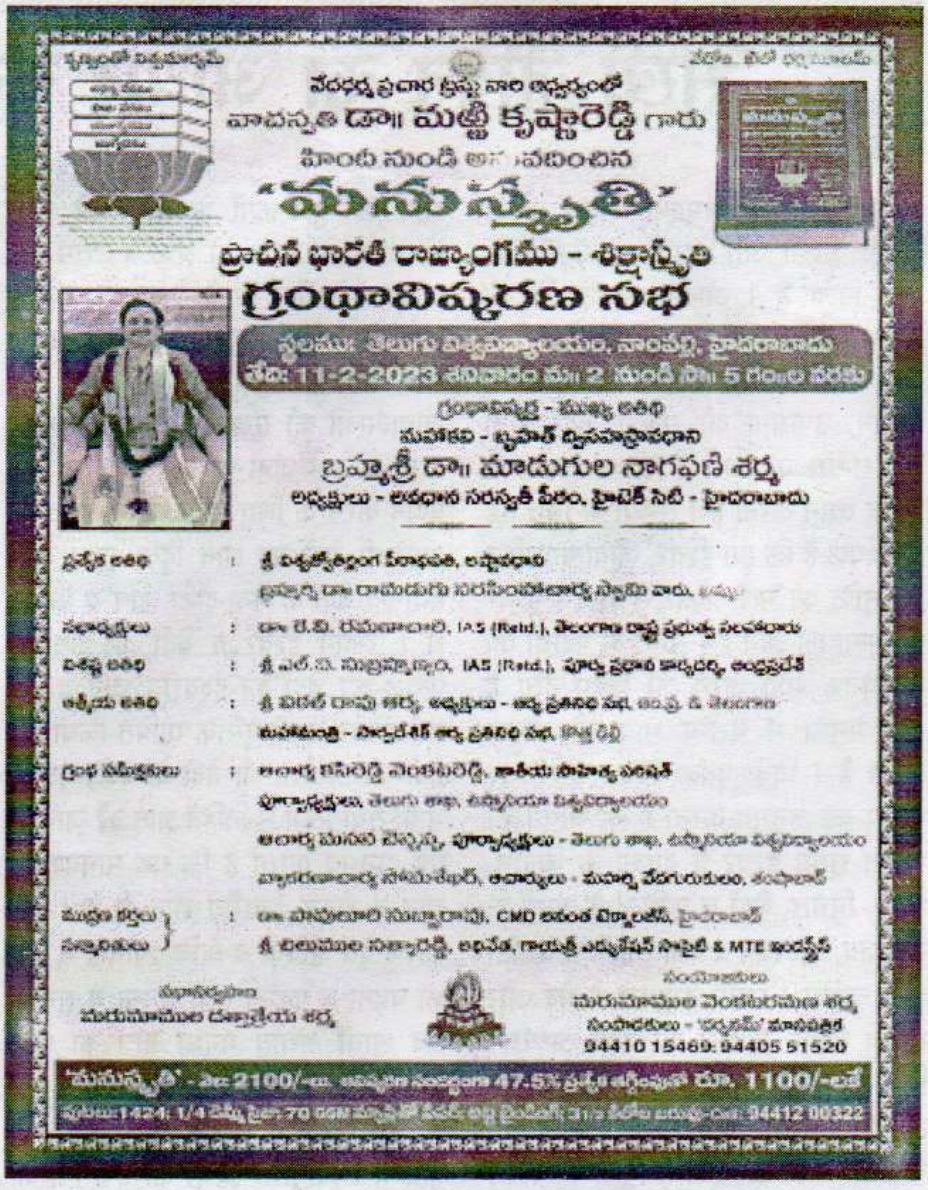

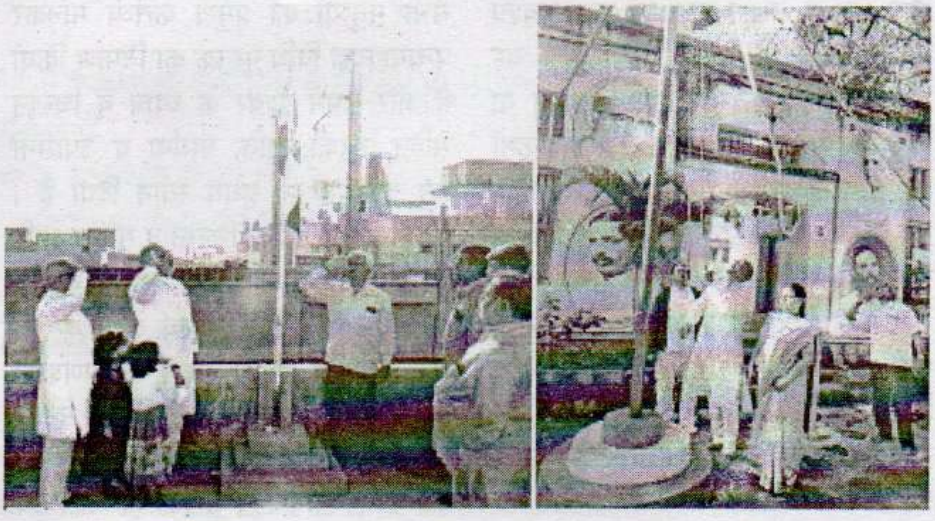

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के कार्यालय में भारतीय गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में सभा के उपप्रधान श्री हरिकिशन वेदालंकार जी ने तिरंगा राष्ट्रीय ध्वज फहराया । साथ ही वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल बेगमपेट में सभा की उपप्रधाना डॉ. वसुधा अरविन्द शास्त्री जी राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए ।

राष्ट्रीय

महान् जगद्गुरु भारत का नवसृजन कैसे

-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पूर्व महामहिम राष्ट्रपति

भारत के बारे में मेरी अभिकल्पनाएँ हैं। पिछले तीन हजार वर्ष के हमारे इतिहास में लुटेरों और आक्रान्तों की कहानियां भरी पड़ी हैं। दुनिया भर के लुटेरे हमारे यहाँ आए, हमारी जमीन और हमारे दिमाग पर कब्जा किया। सिकन्दर से लेकर रोमन, तुर्क, मुगल, पुर्तगाली, अन्ग्रेज, फ्रान्सीसी और डच, इन सभी ने हमारे यहां लूटपाट की। जो कुछ भी हमारे पास था, सब छीन लिया। पर हमने किसी राष्ट्र के साथ ऐसा नहीं किया। हमने किसी के खिलाफ विजय अभियान नहीं चलाया। हमने किसी की जमीन, किसी की संस्कृति या किसी के इतिहास पर कब्जा जमाने की कोशिश नहीं की। हमने कोशिश की तो सिर्फ अपनी सांस्कृतिक सोच के जरिए लोगों का दिल जीतने की। क्यों ? इसलिए कि हम सब की स्वतन्त्रता में विश्वास रखते हैं। इसलिए मेरी अभिकल्पना में स्वतन्त्रता की कल्पना सबसे पहले आती है। मेरे हिसाब से भारत ने स्वतन्त्रता के बारे में पहली अभिकल्पना १८५७ ईस्वी में की थी, जब हमने स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल फूंका था। हमें इस स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है, इसका पोषण करना है और इसे सुदृढ़ बनाना है। हम स्वतन्त्र नहीं है तो कोई भी हमारा मान नहीं रखेगा।

मेरी दूसरी अभिकल्पना विकास को लेकर है। पचास सालों से हम विकासशील देश का तमगा लिए घूम रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम अपने आपको विकसित राष्ट्र के रूप में देखें। सकल धरेलू उत्पाद के दृष्टिकोण से हम विश्व में पान्च देशों में शामिल हैं। कई क्षेत्रों में हमारी विकास दर १० प्रतिशत से अधिक है। गरीबी का स्तर नीचे आ रहा है। हमारी उपलब्धियों का लोहा आज पूरा विश्व मान रहा है, फिर भी खुद को विकसित राष्ट्र के रूप में देखने का आत्मविश्वास नहीं है। हम खुद का एक विकसित, आत्मनिर्भर और परिपूर्ण राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

मेरी तीसरी अभिकल्पना हैं कि भारत दुनिया के सामने मजबूती से खड़ा हो। मेरी मान्यता है कि जब जब हम एक मजबूत भारत के रूप में अपने को स्थापित नहीं करेंगे तब तक दुनिया हमें आदर की निगाह से नहीं देखेगी। केवल बल ही बल को आदर प्रदान करता है। हमें स्वयं को सिर्फ सेन्य-दृष्टि से नहीं, बल्कि आर्थिक शक्ति की दृष्टि से एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरना है। दोनों साथ-साथ चलने चाहिए।

एक बार मे तेल अवीव में था। वहां इसरायली समाचार पत्र पढ़ रहा था। यह बात उस समय की थी, जब इसरायल में हमले और बमबारी के कारण कॉफी लोगों की जाने गई थी। अग्रवादी संगठन हम्मास ने हमला किया था, लेकिन मैंने देखा कि इस अखबार के प्रथम पृष्ठ पर एक ऐसे यहूदी सज्जन की तस्वीर थी, जिसने पान्च साल की कड़ी मेहनत से रेगिस्तानी ज़मीन को बाग में बदल दिया था और चारों तरफ हरियाली ला दी थी। हत्या, बमबारी, मौत, उग्रवाद की खबरें समाचार पत्र के भीतरी पन्नों में थी। यहां भारत में हम सिर्फ मौत, बीमारी, उग्रवाद और अपराध की खबरें पढ़ते हैं। आखिर हम इतने नकारात्मक क्यों हैं ?

एक दूसरा सवाल-आखिर हम क्यों विदेशी वस्तुओं के प्रति इतने मोहित हैं ? हम विदेशी टी.वी. चाहते हैं, विदेशी कमीज हते हैं, विदेशी तकनीक चाहते हैं। इन विदेशियों के प्रति आखिर इतना आकर्षण क्यों ? क्यों हम इस पर विचार नहीं करते कि आत्म-सम्मान सिर्फ आत्म निर्भरता से ही आता है।

बार-बार यह सूनने को मिलता है कि हमारी सरकार निकम्मी है। आप कहते हो कि हमारे कानून बूढ़े को चुके है। आप शिकायत करते हो कि यहां कि नगरपालिकाएं कूड़ा नहीं उठाती। यहां आपके फोन काम नहीं करते, रेलवें की व्यवस्था मजाक लगती है। एयरलाइन दुनियां की सबसे खराब एयरलाइन लगती है। शिकायत यह रहती है कि समय पर नहीं पहूंचती। आप इस तरह की तमाम नकारात्मक बातें करते रहते हो। कभी सोचा कि आप खुद क्या करते हो ? कल्पना करो कि आप सिंगापुर में हो। आप वहां के हवाई अड्डे में हो। आपको लगता है कि यह दुनियां का सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डा हैं। आप वहां न तो सिगरेट का टुकड़ा फेंकते हो और न ही वहां खड़े होकर जाते पीते हो। वहां के भूमिगत रेल रोड लिंक को देखकर आप गर्व महसूस करते हो। खूबसूरत सड़कों पर चलने के लिए आप पान्च डॉलर का भुगतान करते हो। आप पार्किंग स्थल पर आकर पार्किंग टिकट के लिए मशीन दबाते हो। सिंगापुर में यह सब कुछ करते हुए आप कुछ नहीं कहते लेकिन यहीं सब आप भारत में नहीं करते।

क्या आप हिम्मत कर सकते हो कि रमजान के दिन में आप सार्वजनिक स्थलों पर कुछ खा लो ? जेद्दा में बिना सिर ढके हुए आप चलने की हिम्मत जुटा सकते हो ? आप लन्दन के किसी टेलीफोन एक्सचेन्ज के किसी कर्मचारी का १० पाउंड देकर खरीदने की हिम्मत नहीं जुटा सकते। आप वाशिंगटन में ५५ मील प्रति घन्टे की रफ्तार से अधिक गति से कार चलाने की हिम्मत नहीं जुटा सकते, यह कहकर कि 'जानता है, मैं कौन हूँ ? मैं फला फला का बेटा हूँ। यह पैसे पकड़ और चलता बन।' आप ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में शराब पीकर उसकी खोली यूँ ही नहीं फेंक सकते। आपको उसे कूड़ेदान में डालना ही पड़ेगा। आप टोकियों की गलियों में नकल नहीं करत सकते या जाली सर्टिफिकेट नहीं खरीद सकते।

हम विदेशी व्यवस्था में तो रहने और उसका पालन करने के लिए तैयार हो जाते

आर्यावर्त क्या है ?

-प्रो. उमाकन्त उपाध्याय

जब कभी भ्रान्त विचार चल पड़ते हैं तो उनके अवश्यम्भावी अनिष्टकारी परिणामों से बचना दुष्कर हो जाता है। इसी प्रकार का एक अशुद्ध भ्रन्त विचार यह है कि आर्यावर्त की सीमा उत्तर भारत तक ही है और आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश के दक्षिण और और मध्यप्रदेश के उत्तर में स्थित तथाकथि विन्ध्य पर्वत तक है। इस भ्रान्त धारणा ने एक महा अनिष्टकारी कुफल की सृष्टि कर दी कि विन्ध्य के उत्तर अर्थात् उत्तरी भारत में आर्य बसते हैं और दक्षिणी भारत में द्रविड़ बसते हैं। फलस्वरूप राजनीतिक समस्याएँ उठती रहती हैं। आज जो उत्तर और दक्षिण भारत में आर्य और द्रविड़ समस्याएँ खड़ी हो गई हैं, उनके मूल में भी यही भ्रान्त विचार है कि आर्यावर्त उत्तर भारत को ही कहते हैं।

आर्य समाज से बाहर इस प्रकार के विचार रखने वाले बहुत से लोग हैं। इनकी प्रेरणा स्थली यथासम्भव पश्चिम की विद्वत्मण्ड़ली है। जो आर्य विचार विद्वेषिणी है। भारतवर्ष में इस विचारधारा के प्रवक्ता के रूप में श्री रामधारी सिंहजी 'दिनकर' का नाम लिया जा सकता है। अपने महान् ग्रन्थ 'संस्कृत के चार अध्याय' में श्री दिनकर जी स्वामी दयानन्द जी पर खूब बरसते हैं और उत्तर दक्षिण के आर्य-द्रविड़ विवाद का दायित्व स्वामी दयानन्द सरस्वती पर थोपने का असफल प्रयास करते हैं।

श्री दिनकरजी ने लिखा है- ''स्वामी दयानन्द ने ते संस्कृत की सभी सामग्रियों को छोड़कर केवल वेदों को पकड़ा और उनके सभी अनुयायी भी वेदों की दुहाई देने लगे। परिणाम इसका यह हुआ कि वेद और आर्य, भारत में ये दोनों सर्व प्रमुख हो उठे और इतिहासकारों में भी यह धारणा चल पड़ी कि भारत की सारी संस्कृति और सभ्यता वेद वालों अर्थात् आर्यों की रचना है।

''हिन्दू केवल उत्तर भारत में ही नहीं बसते और न यही कहने का कोई आधार था कि हिन्दुत्व की रचना में दक्षिण भारत का कोई योगदान नहीं है। फिर भी स्वामी जी ने आर्यावर्त की जो सीमा बाँधी है, वह विन्ध्याचल पर समाप्त हो जाती है। आर्य-आर्य कहने, वेद-वेद चिल्लाने तथा द्राविड़ भाषाओं में सन्निहित हिन्दुत्व के उपकरणों से अनभिज्ञ रहने का ही यह परिणाम है कि आज दक्षिण में आर्य-विरोधी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है।

''इस सत्य पर यदि उत्तर के हिन्दू ध्यान देते तो दक्षिण के भाइयों को वह कदम उठाना नहीं पड़ता, जिसे वे आज उपेक्षा और क्षोभ से विचलित होकर उठा रहे हैं।'' श्री दिनकरजी यदि सत्यार्थ प्रकाश के तत्सम्बन्धी स्थल देख जाते तो इतना भ्रामक विचार देने में चिन्ता करते। ऐसी उद्धत शब्दावली और ऐसा उपहसनीय आक्षेप सचमुच दिनकरजी को शोभा नहीं देता। इधर आर्य समाज के विद्धानों में बी एकाध की धारणा है कि आर्यावर्त उत्तरी भारत को ही कहते हैं। प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्ता लङ्कार गुरुकुल कांगड़ी के मान्य विद्वान हैं, संसद सदस्य हैं। आपने एक लेख लिखा है ''इस देश के भिन्न-भिन्न नाम। यह लेख कई जगह छपा है। इस लेख से जहां महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का विरोध है वहीं उस अनिष्टकारी विचारधारा की पुष्टि भी होती है कि उत्तर भारत के लोग आर्य हैं और दक्षिण भारत के लोग आर्य नहीं हैं। श्री सिद्धान्तलङ्कार जी ने कई प्रमाण देकर एक निष्कर्ष निकाला है, ''इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि सर्वप्रथम इस देश (उत्तर भारत) का नाम आर्यावर्त या आर्य देश था। इस देश से भिन्न-भिन्न देशों को यहाँ के निवासी म्लेच्छ देश या दस्यु देश कहते थे। वे लोग अपने देश को आर्य देश इसलिए कहते थे क्योंकि वे अपने को आर्य या श्रेष्ठ कहते थे, ठीक ऐसे जैसे आज के युग में पाकिस्तान वाले अपने को पाक या पवित्र कहने लगे हैं। यह धारणा चिन्त्य है, ये विचार भ्रान्त हैं। इस पर विचार अवश्य होना चाहिए।

गुरुकुल कांगड़ी आर्य समाज का दुर्ग है। वहाँ से ऋषि की मान्यता को बल दिया जाता है। वहाँ के विद्वानों, अनुसन्धान कर्ताओं पर आर्य जगत् गर्व करता है। वैदिक जैसे भारतीय विचारधारा विरोधी ग्रन्थ का उत्तर 'गुरुकुल कांगड़ी, के सुयोग्य विद्वान् श्री धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड ने लिखकर अपनी यशोवृद्धि तो की है, गुरुकुल की भी यशश्चन्द्रिका को अधिक चारु कर दिया। स्वयं सिद्धान्तालङ्कार जो भी ऋषि दयानन्द के भक्त और आर्य समाज के मान्य विद्वान हैं। पर जाने, अनजाने उनसे ऋषि दयानन्द का और भारतीय परम्परा का विरोध हो गया। फिर श्री दिनकरजी का क्या दोष ? उनको उपालम्भ किस बात का ?

श्री सिद्धान्तालङ्कार जी ने यह सिद्ध करने के लिए कि आर्यावर्त केवल उत्तर भारत को कहते हैं, निम्न प्रमाण दिए हैं- १) आसमुद्रात्तुवै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त विदुर्वधाः॥ मनु. २-२२, अर्थात्, पूर्व के समुद्र (बंगाल की खाड़ी) से लेकर पश्चिम के समुध्र (अरब सागर) तक तथा उत्तर में हिमालय पर्व से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक का प्रदेश 'आर्यावर्त' है। २) कः पुनरार्यावर्तः। प्रागादर्शात् प्रत्यक् कालक वनात् दक्षिणेन हिमवन्तं उत्तरेण पारियात्रम्। कृमहाभाष्य। (हिमालय के दक्षिण और विन्ध्याचल के उत्तर आर्यावर्त है।) ३) आर्यावर्तः प्रगादर्शात प्रत्यक् कालकवनाद उदक् पारियात्रात् दक्षिणेन हिम्वतः उत्तरेण व विन्ध्यस्य। -वरिष्ठ धर्मसूत्र

ये सारे प्रमाण उन ग्रन्थों के हैं जो प्रत्येक भारतीय को मान्य हैं। इनमें से कुछ को तो स्वामी दयानन्द जी ने भी प्रसङ्गा नुपात से उद्धत किया है। यदि ये प्रमाण मान्य हैं तो इनमें तो सुस्पष्ट लिखा है कि आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा पर विन्ध्य पर्वत है। पर यह विन्ध्य पर्व कहाँ है ? क्या उत्तर और दक्षिण भारत को पृथक् करने

वाले विन्ध्याचल को ही प्राचीन गन्थकार विन्ध्य के नाम से अभिहित कर रहे हैं या किसी अन्य पर्वत का विन्ध्य नाम है ।

एक क्षण के लिए स्वीकार कर लेते हैं कि नर्मदा नदी के उत्तर उत्तर प्रदेश के दक्षिण विन्ध्य है । अब मनुस्मृति के श्लोक की सङ्गति लगाइए । यह आज का तथाकथित विन्ध्य कर्क रेखा के निकट है । यदि इसे ही दक्षिणी सीमा मान लें तो पूर्व में ब्रह्म देश पड़ेगा, समुद्र नहीं, और पश्चिम में भी समुद्र अत्यल्प नाम मात्र को पड़ेगा और ९९ प्रतिशत सीमा स्थल की बनेगी जो पश्चिम के अफगानिस्तान इत्यादि देश होंगे । फिर मनु का वाक्य, ''आसमुद्रात्तुवै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात'' सङ्गत नहीं हुआ । वस्तुतः आज के तथा कथित विन्ध्य का भारत के प्राचीन भूगोल में विन्ध्य नाम नहीं था और मनुस्मृति में या अन्य ग्रन्थों में जो विन्ध्य पर्वत का वर्णन है वह समुद्र तटवर्ती पर्वत है जिसे हम पूर्वीघाट पश्चिमी घाट पर्वतमाला का नाम देते हैं । इस सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द जी का वक्तव्य बिलकुल सुस्पष्ट है । वे लिखते हैं- ''हिमालय की मध्यरेखा से दक्षिण और पहाड़ों के भीतर रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने देश हैं उन सबको आर्यावर्त इसलिए कहते हैं कि यह आर्यावर्त देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्य जनों के निवास करने से आर्यावर्त कहलाया है ।

सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास से यहाँ ऋषि दयानन्द जी ने उत्तर और दक्षिण दोनों भारत को आर्यावर्त माना है और दोनों जगह के निवासियों को आर्य माना है ।इससे श्री दिनकर जी को आक्षेप तो निर्मूल हो ही जाता है, साथ ही यह भी सुस्पष्ट है कि श्री दिनकर जी ने शीघ्रता का परिचय दिया है न कि धैर्यपूर्वक मनन का ।

अस्तु, एक प्रश्न यह रह जाता है कि स्वामी दयानन्द जी ने विन्ध्याचल को रामेश्वर के पास कैसे कह दिया । वैसे सत्यार्थ प्रकाश के उस स्थल के पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि वे विन्ध्य की व्याख्या करने की आवश्यकता तो समझते हैं पर उसे विवादा स्पद नहीं समझते । अन्यथा उसके भी प्रभूत प्रमाण वे दे ही देते ।

किन्तु आज तो यह विवादास्पद हो गया है । श्री सिद्धान्तालङ्कार जी ने इसे उत्तर और दक्षिण का भेदक पर्वत ही माना है । वस्तुतः प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में इसे दक्षिण समुद्र तटवर्ती पर्वत कहा गया है । वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड में वर्णन आता है । वहाँ कई श्लोकों में विन्ध्य पर्वत का प्रसंग उठा हुआ है ।

सन्दर्भ यह है कि रावण सीता को चुराकर ले जा चुका है । जटायु मारा जा चुका है । वालि को मारकर राम ने सुग्रीव को राजा बना दिया है और हनुमान आदि सीता की खोज में निकले हैं । वहाँ समुद्र के किनारे एक पर्वत पर सम्पाति से अङ्गद हनुमान आदि मिले हैं और उनका वार्तालाप होता है । कई श्लोक हमारे सहायक सिद्ध होते हैं-

सुग्रीव वालि के भय से दक्षिण दिशा को भागा था उसका वर्णन है- १) दिशस्तस्या स्ततो भूयः प्रस्थितो दक्षिण दिशम् । विन्ध्य पादपसंकीर्णा चन्दनद्रुम शोभिनाम् ४६ ॥१॥ अर्थ-उस दिशा को चोड़ कर मैं फिर दक्षिण दिसा की ओर प्रस्थित हुआ जहाँ विन्ध्य पर्वत पर वृक्ष और चन्दन के वृक्ष शोभा बढ़ाते हैं ।

यदि विन्ध्य के पास चन्दन के वृक्ष हैं तो यह कर्क रेखा पारकर विन्ध्य नहीं, रामेश्वर का विन्ध्य है । तीन दिशाओं से सुग्रीव के सैनिक लौट आए, सीता का पता न चला । किन्तु दक्षिण दिशा के सैनिक वीर हनुमान- २) ''ततो विचित्य विन्ध्यस्य गुहाश्चगहनानि च'' ४८ ।२। आगे स्वयं प्रभा तापसी ने हनुमान से कहा- ३) एष विन्ध्यो गिरिः श्रीमान् नाना द्रुमलता युतः । एष प्रस्रवणः शैलः सागरोऽयं महोदधिः । ५२ ॥३॥ यहाँ विन्ध्यपर्वत, प्रस्रवण गिरि और सागर महोदधि तीनों पास ही हैं । और देखिए- ४) विन्ध्यस्य तु गिरेः पादे सम्प्रपुष्पितपादपे । उपविश्य महात्मानश्चिन्ता मापेदिरे तदा । ५३ ।३, सीता को न पाकर हनुमान आदि विन्ध्य पर्वत की तलहटी में बैठकर चिन्ता करने लगे । पुनरपि सम्पाति विन्ध्य की कन्दरा से निकल कर हनुमान आदि से बोला- ५) कन्दरादभिनिष्क्रम्य स विन्धयस्य महागिरेः उपविष्टान् हरीन् दृष्टिवा हृष्टात्मा गिरमब्रवीत् ॥५६।३॥ सम्पाति कहता है । ६) निर्दग्धपत्रः पतितो विन्ध्येऽहं वानारर्षभाः ॥ यों तो और भी बहुत से प्रमाण हैं जिनसे सुस्पष्ट है कि विन्ध्ये पर्वत दक्षिण समुद्र तट पर है न कि नर्मदा नदी के उत्तर । एक प्रमाण और देखिए- ७) दक्षिणस्योदधेः तीरे विन्ध्योऽयमिति निश्चितः ॥

इन सारे प्रमाणों से सिद्ध होता है कि विन्ध्य पर्व रामेश्वर के पास है, उत्तर दक्षिण भारत को विभक्त करने वाला नहीं । एक बार जब यह निश्चय हो गया कि विन्ध्याचल पर्यन्त आर्यावर्त की सीमा का अर्थ है कन्या कुमारी पर्यन्त सम्पूर्ण भारत न कि केवल उत्तर भारत । अब इस सन्दर्भ में मनु के ''आसमुद्रातु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमातश्श की भी सङ्गति बैठती है । जब सम्पूर्ण भारत ही आर्यावर्त है तब जैसा श्री सिद्धान्तालङ्कार जी ने लिखा है कि पूर्व में बङ्गाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर है यह ठीक है । अन्यथा नहीं ।

अब ऐसी धारणा बना लेना कि उत्तर भारत वाले अपने को पवित्र और दक्षिण भारत वालों को हीन समझते थे यह केवल कल्पना मात्र है और है अत्यन्त अनिष्टकारी कल्पना ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने इतिहास को ठीक रूप में देखें । सम्पूर्ण देश एक है, एक संस्कृति है, एक इतिहास है । पाश्चात्य विद्वान हम में फूट डालने के लिए उत्तर भारत को आर्यावर्त कहकर दक्षिण भारत को उत्तर भारत से फोड़ना चाहते थे । किन्तु हमें तो अपनी स्थिति सुस्पष्ट करनी चाहिए । यह क्षेत्र है जिसमें कार्य करने की आवश्यकता है । हमें प्रचार करना चाहिए कि सारा भारत आर्यावर्त हैं । यहाँ के सभी निवासी आर्य हैं । द्रविड़ या आदिवासी और बनवासी इत्यादि समस्याएँ तो अंग्रेजों की भेदनीति के फल हैं हमें अपनी जनता को बचा लेना चाहिए । यहाँ जो कुछ लिखा गया है केवल एक ही दृष्टिकोण से-सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए । यदि आर्य, द्रविड़, आदिवासी, बनवासी, इत्यादि की कल्पित भेद भित्तियाँ ध्वस्त की जा सकें तो भारतीय जनता का अति कल्याण हो । (आर्य संसार १९६६ से संङ्कलित)

प्रभु मिलन की राह

-डॉ. अशोक आर्य

मानव को परमपिता परमात्मा ने सौ वर्ष के लिए इस धरती पर भेजा है किन्तु यह मानव का पुरुषार्थ है कि वह इस धरती पर सौ वर्ष से अधिक समय तक रहे अथवा कम। इसके लिए उसे प्रभु के बनाए नियमों के अनुसार अपने जीवन को चलाना होता है। जो बना लेता है, चला लेता है, वह अधिक भी जी सकता है और जो राग विलास में उलझा रहता है उसे सौ वर्ष भी पूर्ण करने का अवसर नहीं मिलता। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद का यह मन्त्र इस प्रकार प्रकाश डाल रहा है :-

तच्चक्षुर्देवहितं पुरताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

-यजुर्वेद ३६.२४

शब्दार्थ

(चक्षुः) हमारे कर्त्तव्य कर्मों को दिखाने वाला सर्वद्रष्टा (देवहितं) उपकारक (शुक्रं) शुद्ध (तत्) वह प्रभु (पुरस्तात्) हमारे सामने (उच्चरत्) उदय हुआ (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (पश्येम) देखते रहें (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (जीवेम) जीवित रहें (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (शृणुयामः सुनें (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (प्रब्रवाम) बोलें अथवा प्रवचन करें (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (अदीनाः स्याम) ऐश्वर्यवान् (शरदः शतात् भूयश्च) सौ वर्ष से अधिक (आयु) तक भी हम देखते, सुनते, बोलते हुए स्वावलम्बी रहते हुए जीवित रहें।

व्याख्यान

प्रेम की शक्ति

हे पिता ! मैं आप की प्रतीक्षा में अपनी कुटिया के दरवाज़े पर खड़ा होकर आपके आने का मार्ग निहार रहा हूँ। इस समय मेरे नेत्र स्निग्ध है, दृष्टि सजल है, मैं अपनी दोनों भुजाएँ पसारे हुए हूँ तथा मेरे हृदय में कभी न समाप्त होने वाली उत्कंठा है। इसी समय आप अपने अत्यधिक उज्ज्वल सिंहासन, जो राजकीय है, सुन्दर है, सम्मोहन से भरा है, से उठते हो। सिंहासन से उतरते समय आप अपने सुनहरे प्रकाश की भुजाएँ फैलाते हुए, सब दिशाओं को अपने अद्भुत रूप से स्नान कराते हुए, अपने स्नेहिल स्पर्श मात्र से सैकड़ों उमंगें लहराते हुए आते हो। आपकी सजधज निराली सी ही है और निराली ही शोभा लिए हुए है। आपके इस स्वरूप को देख मैं तृषित आँखों से आपको निहारता हीरह जाता हूँ। इसी समय आप अपनी अब सीमाओं को त्यागते हुए मुझे अपनी छाती से लग लेते हो, मेरी प्रसन्नता मेरे उर के सब किनारों तो तोड़ते हुए उमड़ने-घुमड़ने लगती है। इस समय पर न तो कोई सीमा और न ही कोई बन्धन ही रह जाता है। आप के असीम, सीमा रहित रूप में यह ससीम, सीमाओं में बँधा हुआ मैं ससीम भी अपने को असीम के समान ही अनुभव करने लगता हूँ, यह कैसा सुन्दर तथा मधुर मिलन है। हे पिता ! प्रेम की यह शक्ति धन्य है।

आनन्द-मंगल के स्रोत का उद्गम

हे प्रभो ! आप प्रेम से भरे होने के कारण अत्यन्त प्रेममय हो। आपका और मेरा यह जो मधुर मिलन हुआ है, यह चिरन्तन है, लम्बे समय तक समाप्त होने वाला नहीं है। मैं जानता हूँ कि आप के आँचल में कभी न समाप्त होने वाली शान्ति निवास करती है। इस शान्ति को स्थाई रूप से पाने के लिए मन आप का आँचल, आप का दामन सदैव के लिए पकड़ लेना चाहता हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ कि आप के चरणों में ही सब प्रकार के आनन्द-मंगल के स्रोत का उद्गम है, मैं इस स्रोत को अपनी छाती में दबाए रखना चाहता हूँ।

इन्द्रियाँ और अन्तरात्मा प्रसन्न

हे सबको ज्योति देने वाले ज्योतिर्मय प्रभु ! आपका रूप अत्यधिक पावन अर्थात् अत्यधिक पवित्र है। यह अत्यन्त तेजस्वी और आह्लाद से भरा हुआ भी है, आपके रूप की राशियाँ पृथिवी, पवन, चनद्र, गगन, सलिल के प्रत्येक कण में बिखर रही हैं, आपकी इस रुपराशि को हम आँख से आँख मिला कर निहारते रहें, ऐसी हमारी इच्छा है। इस रूपराशि को देखने से जो आनन्द हमें मिलता है, उस आनन्द का वर्णन नहीं किया जा सकता, वह आनन्द तो अवर्णनीय है। हमारी यह इच्छा है कि हम अन्य सब कुछ छोड़ कर सैकड़ों वर्षों से भी अधिक समय तक इसे देखते रहे क्योंकि आप के रूप की छटा को देखकर इसके दर्शन मात्र से हमारे अन्तःकरण, हमारे वाह्य, सब प्रकार की इन्द्रियों सहित सम्पूर्ण अन्तरात्मा तक भी न केवल प्रसन्न ही होती है, वल्कि निर्मल भी हो जाती हैं।

शक्तियों का दान करने वालों का योगक्षेम

हे सर्व मंगल की मूर्तिरूप प्रभो ! प्रतिदिन सूर्य उदय होता है। इसके उदय होने से समस्तं सृष्टि आलोक से भर जाती है। सूर्य से आने वाला यह आलोक अथवा प्रकाश अपने आलोक के कारण मार्ग दिखाता है। ठीक सूर्य के समान ही आप भी इस कराचर जगत् को मार्ग दिखाने वाले हो, इस प्रकार सबका मार्ग दर्शन करते हुए सबको अपने-अपने कर्ण में लगा रहे हो, प्रत्येक को अपने अपने कर्म में व्यस्त कर रहे हो। न केवल अग्नि, वरुण अथवा मित्र के ही अपितु सम्पूर्ण विश्व की आप आँख का काम कर रहे हो। आप का यह दिव्य कर्म है कि आप सबका मार्ग दर्शन करते हो। देवों का कल्याण करना भी आपको अत्यधिक प्रिय है। आपका प्रण है कि आप शक्तियों का दान करने वाले लोगों के योगक्षेम का प्रबन्ध करते हो।

आपके गुणों का सौ वर्ष तक कीर्तन करें

हे सर्व प्रकाशक प्रभो ! आपकी यह गौरव से भरी हुई गाथा है, इस गाथा का हम सौ वर्ष तक निरन्तर श्रवण करते रहें। आपके सब गुणों का भी हम निरन्त्र सौ वर्ष तक कीर्तन करते रहें। इसके साथ ही साथ हम भी आप हीके समान सब के भले के लिए सबका मार्गदर्शक बनने का सदा प्रयास करते रहें तथा सौ वर्ष तक निरन्तर लोक-

संग्रह के कार्यों में लगे रहे इसमें ही मानव जीवन की धन्यता छुपी है ।

अंग प्रसन्नता से थिरकने लगते हैं

हे सब रूपों के निकेतन रूप प्रभो ! उस व्यक्ति को कभी दरिद्रता और दीनता नहीं मिल सकती जिसके सामने आप प्रसन्न होकर अपना ऐश्वर्य से भरा हुआ रूप अनावृत कर देते हो, प्रकट कर देते हो । जो जीव आपके बिखरे हुए फूलों को कुन्ज में खड़े हो कर आप के रूपको निहारने में मस्त हो जाता है, उसे कभी भी किसी के सम्मुख अपने हाथ फैलाने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती । वह प्राणी तो अहंकार से भरे किसी अन्य प्राणी के सामने हाथ फैलाकर कभी गिड़गिड़ाने की आवश्यकता ही नहीं समझता, जिसे तारों की मंडली के के अन्दर, सुरभित तरंगों के अन्दर, पवन के झकोरों से झकोरित मधुर लहरियों के अन्दर आपकी बजाई जा रही वीणा की झंकार सुनने से जिसके सब अंग प्रसन्नता से थिरकने लगते हैं ।

सोना चाँदी सुख के साधन नहीं

बहुत विशाल इच्छाएँ रखने वाला प्राणी ही दरिद्र होता है क्योंकि इतनी अधिक इच्छाओं की पूर्ति सम्भव ही नहीं हो पाती । इस प्रकार का व्यक्ति सदा पार्थिव वस्तुओं यथा सोने-चाँदी के टुकड़ो को एकत्र करने में ही परम तृप्ति समझता है । इस प्रकार के प्राणी से अधिक कृपण और कंगाल और कौन हो सकता है ? ऐसा व्यक्ति तो किसी की भी स्तुति के लिए झूठी स्तुति गान करता है, द्वार-द्वार पर जा कर अपना माथा झुकाता है और स्थान-स्थान पर अपनी अन्तरात्मा को बेचने के लिए सदा विवश-सा ही बना रहता है ।

अपार धन के स्वामी

हे भक्तों के वत्सल पिता ! आप सदा अपने भक्तों के योगक्षेम की, उनके भले की चिन्ता करते हो । प्राणी को जो भी कुछ चाहिए तथा जो कुछ उसके लिए उपयोगी है, वह सब कुछ आप बिना माँगे ही हमें देते रहते हो । आपको चरणों की शीतल छाया में बैठने से हमारी सब प्रकार की कामनाएँ प्रति क्षण पूर्ण हो रही है । जब इच्छाएँ ही पूर्ण हो रही हैं तो फिर हम में दीनता कहाँ ? हममें आप के कारण दीनता दरिद्रता नहीं अपितु हम तो अपार धन के स्वामी हैं ।

अमर और अभय बनें

प्रभो ! आपकी मित्रता से बढ़कर इस जगत् में अन्य कोई भी वस्तु नहीं है जिसके पास आप की मित्रता का कुछ भी अंश है, वह परम भाग्यशाली है इसलिए हे सबका मंगल चाहने वाले प्रभो ! हम चाहते हैं कि आपके चरणों में हमारी अत्यधिक दृढ प्रीति हो । बस, हम आप से केवल यही माँगते हैं । आपकी छाया में हमारा निवास अमृत के समान है । हम सदा इस छाया के आश्रय में रहें । इस प्रकार हम अमर और अभय बनें ।

है, लेकिन भारतीय भूमि पर आते ही बेलगाम हो जाते हैं, जैसे ही हम भारत की भूमि पर आते है, सड़क पर कागज और सिगरेट के टुकड़े फेंकना शुरू कर देते हैं । मगर आप बाहरी देशों में सभ्य नागरिक की तरह व्यवहार कर सकते हैं तो यहां भारत में क्यों नहीं ?

एक बार मुम्बई नगरपालिका के पूर्व आयुक्त विनाथाकार ने अपने साक्षात्कार में कहा था कि अमीर लोग अपने कुत्तो को सड़क पर लाकर इधर-उदर पाखाना पेशाब करवाते है और वही लोग स्थानीय निकाय पर सड़क गन्दा रखने या सफाई न कराने का आरोप लगाते है । वे अधिकारियों से ही कुछ करने की अपेक्षा बयां रखते हैं ? जब उनके कुत्तों की पाखाना, पेशाव कराना होता है तो वह बाहर खुले में आ जाते हैं, लेकिन अमेरिका जैसे देश में कुत्ता पालने वाले हर आदमी को कुत्ते का पाखाना, पेशाब खुद साफ करना पड़ता है । जापान में भी ऐसा ही होता है ।

क्या भारतीय इस तरह की जिम्मेदारी लेंगे ? हम तो पीछे रहकर सरकार द्वारा सब कुछ उठाने से लेकर इधर-उधर कागज उठाने तक यह अपेक्षा तो करते हैं कि रेलवे अपने शौचालयों को साफ सुधरा रखे, लेकिन हम यह जानने की कोशिश नहीं करते कि शौचालयों का उपयोग ठीक ठाक कैसे हो ? हम चाहते है कि इन्डियन एयरलाइन्स और एयर इन्डिया हमको दुनिया का बेहतरीन भोजन और स्वच्छ शौचालय उपलब्ध कराए लेकिन उसे गन्दा करने का कोई मौका हम नहीं चुकाते ।

बात जब समाजिक बुराईया की आती है । चाहे वह महिलाओं से सम्बन्धित हो, दहेज का मामला हो, छोटी बच्चियां के साथ छेड़छाड़ का मामला हो, हम अपनी जिम्मेदारी निभाने से भागते हैं । जब किसी से जिम्मेदारी निभाने की बात कहीं जाती है तो वह कहता है कि पूरा सिस्टम ही खराब है, हम ही अकेले कैसे बदल सकते है ?

लोग यह दलील देते है, क्या फर्क पड़ता, अगर हम अपने बेटे के लिए दहेज मांगते हैं ? आखिर यह सिस्टम बना कैसे है ? कौन इसको बदलेगा ? जब बात खुद में सुधार की आती है तो लोग सुविधा के अनुसार अपने आपको उससे अलग कर लेते है ।

एक ढ़ील-ढीले डरपोक की तरह हम अपनी हम अपनी कमजोरियों से भागते हुए अमेरिका की तरफ देखते है, उसकी महिमा का बखान करते है । जब न्यूयार्क में रहना जोखिम भरा हो जाता है तो इस ब्रिटेन की तरफ भागते है । जब ब्रिटेन में बेरोजगारी की मार पड़ती है तो हम खाड़ी की ओर भागते है और जब खाड़ी देशों में युद्ध आदि संकट उत्पन्न होता है, हम अपनी सरकार से मांग करते है कि जल्दी से हमें बचाओं, अपने देश ले चलो । तब यही देश उनको सबसे सुरक्षित लगता है ।

हर आदमी देश की व्यवस्था को गाली देता है । कोई खुद में झांकने या अपनी अन्तरात्मा को जगाने का प्रयास नहीं करता । आज हमें सिर्फ यह बताने की जरूरत नहीं कि देश हमारे लिए क्या कर रहा है, क्योंकि इस पर विचार करने की जरूरत है कि हम देश के लिए क्या कर रहे है ?

सिकुड़ती मानवीय संवेदनाएं

-शोभा जैन

दुनिया मेरे आगे

हम एक आक्रामक दुनिया का हिस्सा हैं, जहां बहसें अब कमाने का जरिया हो चली हैं । विकास का पूरा दावा ही प्रकृति के विनाश पर खड़ा है । एक समय था जब जल के बिना कोई संकल्प नहीं हुआ करता था अब तो गंगा हमसे नाराज है । नदियों के पूजक देश के साहित्य में नदियों को पुराण पुरुष की नाड़ी कहा गया है, क्योंकि उनसे ही देश की भौगोलक, सांस्कृतिक और मिथकीय एकता का आधार मिलता है । लेकिन नदियां अब राजनीति के मुद्दों से अधिक कुछ नहीं । यह सरकारी अनुदान पाने का एक जरिया है । पुलों का टूटना, सड़कों का नष्ट हो जाना महज एक आपदा है, जिसका वाकायदा मुआवजा मिलता है । यह एक रहस्यमय व्यक्तिनिष्ठ रोमांटिक दुनिया है जो व्यक्ति केन्द्रित है और हमारी धार्मिकता एकांगी । दरअसल, शिक्षा-संस्कृति का क्षेत्र न तो धर्म क्षेत्र है, न ही कुरुक्षेत्र । इसे ज्ञान का क्षेत्र ही बने रहने की कोई स्थायी मनोभूमि हमारे पास नहीं । नदियां, तीर्थों, पर्वों, उत्सवों, मेलों का रंग अब बाजारू हो गया है । उनको सहजेने के पीछे की मुहिम सांस्कृतिक नहीं व्यावसायिक है । उन्हीं को भेदकर आधुनिक बाजार खड़ा करने की साजिश विस्तार ले रही । आर्थ शास्त्र और समाज शास्त्र में कहीं कोई अन्तर्सम्बन्ध नहीं दिखता ।

दो कमरों में सिमटी शहरी जिन्दगी जितनी कुरूप उतनी अन्धेरी । कहने को आलीशान और शानदार तरीके से बनाई गई गगनचुम्बी इमारतें, लेकिन उनकी बनावट ऐसी कि इसमें बने घरों के भीतर सूरज झांक नहीं सकता । वीडियो बनाकर थकी वे स्त्रियां सो जाती हैं कि सुबह दफ्तर जाना है । शहरीकरण के कुहासे में बसी स्त्रियां आधुनिक हो गई है और आत्मनिर्भर भी । हालांकि आधुनिकता और आत्मनिर्भरता के वास्तविक मूल्य कितने जीवंत है, यह नहीं कहा जा सकता । कभी प्रकृति से जीवन पाने वाली पहले की पीढ़ियों के बीच ही आज गिलहरी, फूलदान, चिड़िया, फूल-पती से दूर हो चुके बच्चे अब सिर्फ यन्त्रकी भाषा समझते हैं । पड़ोसीजन्य आत्मीयता अब सूख चुकी । यों भी यन्त्रों की दुनिया में गुम इन्सानों के बीच अपनी संवेदना बचेगी भी कहां । वहां भी यो यन्त्रों और उसके प्रभाव से संचालित दुनिया बनेगी ! आधुनिकता की लपटों में वैयक्तिकता का धुआं विस्तार पा रहा और हम भूमण्डलीय मीडिया से भूण्डलीय नागरिक हो गए ।

अपनी जड़ों और जमीन से कटे-कटे हम शोरगुल ही नहीं, शोर-शराबे में खोए भ्रम, प्रपंचों, सोशल मीडिया के छायाभासों और छलनाओं के युग में रच बस रहे हैं । चकाचौध और ग्लैमर के शिखरों से उतारी गई शख्सियतें बड़े-बड़े व्यावसायिक परिसरों या मालों ऐसे इठला रही हैं, जैसे पूरी व्यवस्था और तन्त्र उनकी गिरफ्त में हो । और क्या भरोसा कि ऐसा सचमुच ही हो । उनके जीवन और एक साधारण इन्सान के जीवन में जितना फांक और फर्क होता है, उसमें तो कुछ भी सम्भव दिखता है । इसे तो ऐसे भी देख सकते हैं कि व्यवस्था या तन्त्र सिके लिए किस तरह और कितनी सक्रियता से काम करता है, किससे कितना सरोकार रखता है ।

इसी यन्त्रवत जीवन के विकास के बीच सोच और संवेदना भी यन्त्रीकृत होती जा रही है और यह हमारे अपने दायरे में भी सिर चढ़ कर बोलने लगा है । मसलन, भ्रूणहत्या करते-करते हमने कन्या भाव का ही अन्त कर दिया है । कन्याएं आज के आधुनिक कहे जाने वाले दौर में भी बराबरी के लिए राह ताक रही हैं । केवल सफलताओं की ही नहीं संकट की भी कई दृष्टियां होती हैं । नेहरू के युग की विकास योजनाएं जिस तरह अपनी ठसक खो रही हैं, एक नए किस्म का अर्थतन्त्र रचा जा रहा, जिसका लक्ष्य उपभोक्ता को सन्तुष्ट करना नहीं, बाजार आश्रित बना देना है । दुखद आश्चर्य यह है कि इन तमाम संकटों के केन्द्र में धर्म है । राममनोहर लोहिया कहते थे- 'धर्म एक दीर्घकालीन राजनीति है और राजनीति एक अल्पकालीन धर्म' ।

हम एक ऐसी दुनिया का हिस्सा हो चुके हैं, जिसमें भूमाफियाओं, अकादमियों के क्षेत्र उन लोगों की बन आई है, जिन्होंने इस समाज और दुनिया में किसी न किसी रूप में वर्चस्व कायम किया है । अब डीजे के शोर में कहीं कोई लोकगीत नहीं गाता । क्या पता, गाने ही न दिया जाए ! सुनने वाला भी कौन मिलेगा ! पश्चिम की आधुनिकता ने सांस्कृतिक आचार-व्यवहार की पद्धतियों और आपस में एक दूसरे को बरतने का न सिर्फ भाव बदल दिया, बल्कि बाजार भी बदल दिया । टीवी चैनलों का चर्चा-चक्र देशीपन को खदेड़ रहा । हल-बैल और कुलदेवता की पूजा जैसी बातें अनपढ़ या निरक्षर और रूढ़िवादी लगने लगी हैं । लेकिन क्या इस बीच जीवन के वास्तविक तत्त्व भी ऐसे ही हाशिए पर नहीं चले जा रहे हैं !

गावों को विस्थापित कर महानगरों में रूपांतरित कर हम एक अजनबी शहर का निर्माण कर रहे हैं । संस्कृति के नाम पर युद्ध का आंगन नहीं बनना है । हमें भारतीयता के समग्र में झांकना होगा, जहां आत्मनिर्भता तो हो, लेकिन शीलता और करुणा का उत्सर्ग भी हो । 'ग्लोबल राइटिंग' या वैश्विक लेखन के मायावी सपनों में उतरने से पहले हमें अपनी तासीर आबोहवा जरूर एक बार टटोलना चाहिए ।

देश के प्रति

छब्बीस जनवरी भारत की प्रतिज्ञा औरस्वतन्त्र भारत का त्योहार है । जैसे विना कठोर साधनाके साध्य का स्वर्ग नहीं मिलता, सफलता का शीर्ष टेढ़ी-मेढ़ी खौफनाक पगडंडियों से होकर ही पाया जाता है और बिना तपस्या के वरदान नहीं मिलता, वैसे ही छब्बीस जनवरी साधना का कन्टकाकीर्ण पथ और कठोर तपस्या है, जिसे फलस्वरूप पन्द्रह आगस्त यानी आजादी का दिन एक सिद्धि है । शहीद सपूतों के वलिदान और महात्मा गाँधी के कठिन परिश्रम, कठोर तपस्या और अनन्त संघर्ष के फलस्वरूप मिली आजादी से सभी भारतीय गौरवान्वित हैं ।

सर्वत्र शक्ति सद्री और समुन्नति के प्रतीक, अशोक के चक्र की तरह अवाध गति, अविराम संघर्ष, अनन्त साधना का सन्देश देने वाले तिरंगे झण्डे को फहराते हुए राष्ट्र की वेदी पर प्राणों की वलि चढ़ाने वाले अमर शहीदों के समाधियों पर श्रद्धा और भक्ति के फूल चढ़ाए जाते हैं । इस परम्परा को देश, प्रदेश और सभी संस्थाओं में सम्मानपूर्वक मनाया जाता है । लेकिन अफसोस कि इसके उद्देश्यों को भूल जाते हैं, दायित्वों से मुंह मोड़ लेते हैं । अपनों को झूठे सपने दिखाकर सवको ब्रमजाल में फंसाते हैं । निहित स्वार्थ के कारण देश एवं संस्थाओं की प्रगति रुक जाती है ।

अव इस दिन हम सभी को एकजुट होकर अपने समाज, संस्थाओं, राज्य और राष्ट्र की प्रगति के लिए अपने दायित्वों को पूरा करने का संकल्प लेने की जरूरत है । प्रतिज्ञा करने की जरूरत है कि हम भारत की आजादी और भौगोलिक सीमा को सदैव सुरक्षित रखेंगे, धर्मनिरपेक्ष लोकतान्त्रिक व्यवस्था को वनाए रखेंगे, अन्धविश्वास को छोड़ कर, रूढ़िवादी साम्प्रदायिक प्रतिवन्धों को तोड़कर कराहती हुई मानवता की रक्षा करेंगे, इन्सानियत और मुहब्वत के साथ 'हिन्दू, मुसलिम, सिक्ख, ईसाई...आपस में हैं भाई-भाई' के भाव को सार्थक वनाएंगे । भारत की खुशहाली, समृद्धि और प्रगति के लिए ईमानदारी पूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे । *-कामता प्रसाद, भभुआ*

समावेशी नीतियां

आम लोगों को यही उम्मीद होती है कि वजट रोजगार सृजन को वढ़ावा देने के लिए एक खाका तैयार करेगा । रेलवे, रक्षा, हवाई अड्डे, सिन्चाई, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सड़कों के लिए वढ़ा हुआ आवन्टन वुनियादी अपेक्षाएं हैं । उम्मीद है कि कर के स्तर और कटौतियां बढ़ाकर वेतनभोगी वर्ग को वड़ी राहत दी जी जकेगी । मध्यम वर्ग के हाथों में वढ़ी हुई आय न केवल खपत को वढ़ावा देगी, वल्कि सेवा क्षेत्र को भी मदद करेगी । एक देश के रूप में भारत में करदाताओं का प्रतिशत कम है और जीडीपी अनुपात में हमारा कर काफी कम है । ऐसी स्थिति में अमीर किसानों की कृषि आय पर टैक्स लगाया जाना चाहिए, ताकि कर का दायरा बढ़ाया जा सके । शुरुआत में पचास लाख रुपए से ऊपर की कृषि आय पर टैक्स लगाया जा सकता है ।

कम दरों पर ऋण उपलब्ध कराने के लिए एक वैकल्पिक तन्त्र हो सकता है । नवाचार की मदद के लिए ईएसओपी के लिए कर नियमों में संशोधन पर विचार कियाजा सकता है । अचल सम्पत्ति क्षेत्र को वढ़ावा देने के लिए आवास ऋण पर व्याज के लिए कटौती को वर्तमान दो लाख रुपए से वढ़ाया जा सकता है । इससे एक ओर आम आदमी और कारपोरेट भारत की आकांक्षाओं को सन्तुलित करने और दूसरी ओर राजकोषीय अनुशासन वनाए रखने की अपेक्षा की जाती है । यह वजट २०२४ में आम चुनाव से पहले आखिरी वजट होने की उम्मीद है । इसलिए हम उम्मीद करते हैं कि वित्त मन्त्रालय भारत के लिए एक नीली-आकाश दृष्टि प्रदान करेगा और भारत की दस ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था वनने की आकांक्षा को पूरा करने के लिए एक ढांचा पेश पेश करेगा ।

-विजय सिंह अधिकारी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

बेहतर की कसौटी

भारत के वैज्ञानिकों ने शून्य की खोज की तमाम प्रकार की नवाचार के दिशा में खोज की । मंगलयान, चन्द्रयान को सवसे कम खर्चे में सफल किया और विदेश के वैज्ञानिकों को लिए भी मिसाल दिया । आज के वैश्वीकरण में विश्व के महानतम कम्पनियों के शीर्ष पद पर भारत के ही पढ़े-लिखे लोग काम कर रहे हैं । भारत के लोग हर क्षेत्र में आगे वढ़ रहे हैं, लेकिन सरकार ने विदेशी विश्वविद्यालयों के परिसर भारत में खोलने की अनुमति दे दी है । प्रश्न उठता है कि भारत के उन विश्वविद्यालय क्या होगा, जिनके परिसर से हजारों होनहार विद्यार्थी पूरे विश्व का नेतृत्व कर रहे हैं,जो देश के लिए गर्व का विषय है । चाहे वह जेएनयू होया बीएचयू हो या इलाहावाद विश्वविद्यालय हो, वहां के होनहार छात्र प्रशासनिक अधिकारी होने के साथ राजनीतिक भागीदारी में भी अपना लोहा मनवा रहे हैं । जिस विश्वविद्यालय ने भारत को चार प्रधानमन्त्री दिया, कई अर्थशास्त्री, कई वैज्ञानिक दिए, आज उसकी रैंकिंग दो सौ के पार है । कहने का आशय यह है कि जो विश्वविद्यालय देश में हैं, उनमें सुधार किया जाए और उच्च शिक्षा के लिए वेहतर वनाया जाए । सवाल यह भी है कि क्या गरीव विद्यार्थियों के लिए उचित फीस होगी, जिससे किसान गरीव, शोषित, वन्चित के घरों के विद्यार्थी विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ सकेंगे ! यह ध्यान रखने की जरूरत है कि पिछले कुछ सालों में देश के ही विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में पढ़ाई करने के खर्चों में जिस तेजी से वढ़ोतरी हुई है, उसमें गरीव तवकों के विद्यार्थियों के लिए कई तरहकी चुनौतियां खड़ी होगई हैं । ऐसे में इस तरह की व्यवस्था बनाने की कोशिश होनी चाहिए कि वेहतर शिक्षा तक सव की पहुंच हो ।

-सचिन पान्डेय, इलाहावाद विवि

वास्तविक पुरस्कार

इस वर्ष छब्बीस जनवरी पर जिन ग्यारह बच्चों को सम्मानित किया जा रहा है, उनमें छह लड़के और पांच लड़कियां हैं । हर बच्चे को तमगा और प्रमाणपत्र के साथ एक लाख रुपए नकद का इनाम दिया जाएगा । विलक्षण प्रतिभा के धनी इन बच्चों को सम्मानित और पुरस्कृत किए जाने के साथ ही इनके उज्ज्वल भविष्य के लिए इनकी समुचित पढ़ाई और भविष्य वेहतर वन सके, इसकी पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिए ! यही उनके लिए वास्तविक पुरस्कार होगा ! अन्यथा होता यह आया है कि छब्बीस जनवरी पर पुरस्कृत होने के वाद देश इन वच्चों को भुला देता है ! अगर शासन इन्हें आगे रहकर इनकी इच्छा अनुसार इनका भविष्य संवारने का जिम्मा ले तो यह अन्य वच्चों के लिए भी प्रेरणादायी उदाहरण होगा !

-सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम, म.प्र.

श्रद्धांजलि

आर्य समाज चन्द्रीकापूर के पूर्व प्रधान श्री श्रीधर प्रसाद सक्सेना का दि. २६ जनवरी २०२३ गुरुवार के दिन हुसैनीआलम, हैदरावाद में उनके निवास स्थान पर हुआ । सक्सेना जी आर्य समाज के एक अच्छे कार्यकर्ता थे और आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के अन्तरंग सदस्य भी थे । वे शिक्षा विभाग में प्राचार्य के पद पर रहते हुए सेवा निवृत हुए । उनकी सेवाओं को आर्य जगत् सदैव याद रखेगा ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर उनके परिवार जन को कष्ट सहने का साहस प्रदान करे ।

-सभा प्रधान

श्रद्धांजलि

श्रीमती ओरुगन्टी लक्ष्मी देवी नहीं रही ।

दिनांक 30-1-2023 सोमवार के दिन श्रीमति ओरुगन्टी लक्ष्मीदेवी का निधन हुआ । वे

एक साहसी तथा निर्भिक आर्य समाजी कार्यकर्ता, अच्छी वक्ता तथा एक निष्णात पुरोहित भी थी । उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में विताया । तेलंगाना, आन्ध्रा तथा अन्य प्रान्तों में जहां भी आर्य समाज का छोटा या वड़ा कार्यक्रम होता था उसमें वे वड़े ही उत्साह के साथ भाग लेती थी और श्रावण मास में भी पूर्ण मास तक श्रावणी वेद प्रचार में अपना पूर्ण योगदान देती थी और तेलंगाना के सभी गुरुकुलों को अपनी यथाशक्ति योगदान देती रहती थी । उनके पति श्री ओरुगन्टी रंगय्या जी जो वहुत पहले से आर्य समाज मिर्यालगुड़ा से सभा के लिए प्रतिनिधि थे । दोनों पति-पत्नी आर्य समाज में वड़ी लगन से अपना उत्तर दायित्व निभाया । वे एक वृद्धाश्रम भी चलाती रही । ऐसी एक तेलुगु भाषी विद्वान विदूषी का आर्य समाज से विछड़ना आर्य जगत् के लिए वड़ी हानि है जिसकी निकट भविष्य पूर्ति होना असम्भव है ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर उनके परिवार जन को कष्ट सहने का साहस प्रदान करे ।

-विट्ठलराव आर्य, सभा प्रधान

श्रद्धांजलि

श्री गोविन्द सिंह का निधन 79 वर्ष के आयु में दिनांक 25-1-2023 को हुआ ।

श्री गोविन्द सिंह का जन्म चिन्तलवस्ती, खैरतावाद में हुआ था । पिता का नाम मोहन सिंह और माता का नाम सुन्दर वाई था ।

'मदरसा फ़ौकानिया मशकी खैरतावाद' में उर्दू माध्यम से मैट्रिक तक शिक्षा पाए थे । तत्पश्चात् वे सर्वे ऑफ इण्डिया में नौकर हो गए । इसी विभाग से वे सेवा निवृत्त हो गए ।

अतः नौकरी में रहते हुए ही उन्होंने 'विद्यावाचस्पति', 'हिन्दी साहित्यरत्न', 'गीता कोविद' और एम.ए. की उपाधियाँ प्राप्त की थी । वचपन से ही उन पर आर्य समाज का प्रभाव पड़ा था । 'निःशुल्क प्रभात पाठशाला' खैरतावाद में आर्य समाज का केन्द्र था । वहाँ आर्य समाज के कार्यक्रमों में वे सक्रिय भाग लेते थे । आर्य विद्वानों और भजनिकों को सुनकर वैदिक कर्मकाण्ड में निष्णात हो गए । उन्हें आर्य साहित्य का गहन अध्ययन था । वे आर्य समाज ध्रुवपेट के वरसों तक मन्त्री पद पर रहे । वे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि भी रहे और आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे । ऐसे कार्यकर्ता का आर्य समाज से विछड़ जाना आर्य समाज के लिए वड़ी क्षति है । इनके निधन का समाचार सुनकर सभा

के प्रधान श्री विट्ठल राव जी और कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी उनके निवास पर पहुँचकर श्रद्धांजलि अर्पित किए ।

उनकी अन्त्येष्टि पुरानापुल शमशानघाट पर वैदिक पद्धति से पण्डित हरिकिशन जी वेदालंकार ने सम्पन्न की । सर्वश्री सभा मन्त्री श्री वेंकट रघुरामुलु जी, श्री श्रीनिवास आर्य, तथा ध्रुवपेट समाज के मन्त्री श्री जे.डी. मनोहर आदि ने उक्त संस्कार में भाग लिए ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर उनके परिवार जन को कष्ट सहने का साहस प्रदान करे ।

-विट्ठलराव आर्य, सभा प्रधान

మనుస్మృతి విషయ దర్శిని

మనుస్మృతి'లో ఏమున్నదో.. ఎందుకు చదవాలో.. తెలుసుకోవాలనుకుంటే
ఈ వీక్షిక - భూమిక - విశేష వివరణల సహిత
12 అధ్యాయాలలో గల విషయ సూచికను
చదవండి - దీని గొప్పతనాన్ని తెలుసుకోండి

మనుస్మృతి

మనుధర్మ శాస్త్రము

ప్రాచీన భారత రాజ్యాంగము = శిక్షాస్మృతి

'మనుస్మృతి'పై గల అనేక ఆక్షేపణలకు
సహేతుకమైన సమాధానం తెలిపే గ్రంథరాజము

విశేష వివరణ సహిత ప్రక్షిప్తాల పరిశీలనం
మహర్షి దయానంద భాష్యోపేతం
పరిశోధితము ✧ పరిశీలితము ✧ పరిష్కృతము
✧ వివిధ వివాదాల నిర్మూలనము

'మనుస్మృతి'ని వ్యతిరేకించే వారికి సవాల్...
దీన్ని పూర్తిగా చదివినవారే చర్చకు అర్హులు

ప్రక్షిప్తాల ప్రక్షాళనం
కల్పితాల నిరాకరణం
ఇది మనుస్మృతిని పునరుద్ధరించే గ్రంథం

వేదధర్మ పునఃస్థాపనార్థం 'మనుస్మృతి' పునరుద్ధరణ - కులమత నిర్మూలన

హిందీ మూలం
డా॥ సురేంద్ర కుమార్

తెలుగు అనువాదం
డా॥ మల్లి కృష్ణారెడ్డి ఆర్య

ఈ ప్రక్షిప్త శ్లోకాలు గల మనుస్మృతులను తగులబెట్టండి

విశ్వవిఖ్యాత మనుధర్మశాస్త్రంపైగల దుష్ప్రచారాలను దూరం చేయండి.

ఇందులో 1458 ప్రక్షిప్త శ్లోకాలు చేరినందున ఇవి విషమిశ్రిత పాయసములాంటివి

ఇవి ప్రామాణికాలు కావు. మానవ సమాజానికి హాని చేయునవి. ప్రతి ఒక్కరి నిరసించదగినవి

తెలుగులో నాకు లభించిన 'మనుస్మృతులు' ముద్రించిన వారు	
1. వేదం వేంకట సుబ్బరామశాస్త్రి	- వావిళ్ళవారు & మోహన్ పబ్లికేషన్స్, రాజమండ్రి-1
2. ఆపంచ సత్యనారాయణ	- ఇమ్మడిశెట్టి అక్కేశ్వరరావు ఛారిటబుల్ ట్రస్టు
3. భాగవతుల సుబ్రహ్మణ్యం	- నవరత్న బుక్‌హౌస్, విజయవాడ-2
4. కె.వై.ఎల్. నరసింహారావు	- కె.వై.ఎల్. నరసింహారావు, హైదరాబాద్
5. డా॥ ఎన్. ఎల్. నరసింహాచార్య	- ఎన్. రంగనాయకమ్మ-అల్వాల్-హైదరాబాద్-10
6. పొనుగోటి కృష్ణారెడ్డి	- జయంతి పబ్లికేషన్స్-విజయవాడ-2
7. ముత్తేవి రవీంద్రనాథ్	- విశాలాంధ్ర విజ్ఞాన సమితి, విజయవాడ

గమనిక : మనువు ప్రతిష్ఠకు, ధర్మశాస్త్ర ప్రాముఖ్యతకు హాని కలిగిస్తున్న ఈ పుస్తకాలను ఎక్కడ కనిపించినా చింపి వేయండి. తగుల బెట్టండి-చెత్తలో విసిరి వేయండి.

సూచన : ఇంకెందరు పండితులు **'మనుస్మృతి'**కి తెలుగు తాత్పర్యం రచించినారో నాకు తెలియదు. నాకు లభించిన గ్రంథాలు ఇవే. వీటిని చదివిన పాఠకులు **'మనుస్మృతి'**ని చాలా ఘోరంగా విమర్శిస్తూ- తగులబెడుతున్నారు. కాబట్టి ఎట్టి పరిస్థితులలో కూడా వీటిని ప్రామాణికంగా అంగీకరించ కూడదని మనవి-

ఎందుకంటే-ఇప్పుడే మనుస్మృతి పేర అందుబాటులో ఉన్న పుస్తకాలలో శూద్రుల గురించి, చాండాలాది బడుగు వర్గాల గురించి, అంత్యజాతుల గురించి, స్త్రీల గురించి చాలా నీచంగా, క్రూరంగా రాయబడి ఉంది. వాటిని చదివితే మనిషన్న ప్రతి ఒక్కడికి ఒళ్ళు మండుతుంది. మరీ ఇంత దారుణమా ? అమానుషమా ? అని 'మనుస్మృతి' పైన చాలా తీవ్రమైన జుగుప్స కలుగుతుంది. నిమ్న స్థాయి జాతుల నుద్దేశించి నిర్దేశించిన శిక్షలనుగాని, వాటి వెనుక ఉన్న వర్ణాధిక్య భావజాలన్ని కానీ ఈ కాలంలో ఎవరూ సమర్థించరు, సహించరు.

ఇవి చెత్త పుస్తకాలు-అందుకే వీటిని తగులబెట్టండి : మనుస్మృతిని అప్రతిష్ఠపాలు చేసింది. తగులబెట్టేంత స్థాయికి దిగజార్చింది, సమాజానికి దూరం చేసింది ఇలాంటి ప్రక్షిప్తాలు గల గ్రంథాలే. ఇవి ఎక్కడ కనిపించినా తగలబెట్టండి. ఇవి ఏ మాత్రం సమాజానికి ఉపయోగపడని చెత్త పుస్తకాలు. పైగా విమర్శలకు, దూషణలకు, దహనానికి కారణమౌతున్నవి. ఏ మాత్రం బుద్ధి, జ్ఞానం ఉన్నవాడు వీటిని మెచ్చుకోడు. **'వీటివల్ల అసలు 'మనుస్మృతి'కి ఇప్పటికే ఎనలేని హాని జరిగింది. మను మహర్షికి చెప్పజాలనంత అవమానం జరిగింది. ఒక మహోన్నత ధర్మశాస్త్రానికి సమాజం దూరమయ్యింది'.**

కావున పాఠకులారా ! పైన తెలిపినవే గాక ఇంకెక్కడైనా ఇలాంటి ప్రక్షిప్తసహిత మనుస్మృతి పుస్తకాలు కనిపిస్తే కాల్చి వేయండి. టంతకు ముందే కొంటే బయటకు విసిరేయండి. బహిష్కరించండి.

ముద్రణ కర్తలకు మనవి : మన హిందూ సమాజాన్ని, భారతీయ సంస్కృతిని విమర్శలకు గురిచేసే ఇలాంటి దుష్ట గ్రంథాలను దయచేసి ముద్రించకండి. సద్గ్రంథాలను ముద్రించి మీ వ్యాపారాలను వృద్ధి చేసుకోండి. సత్య సనాతన వైదిక ధర్మ పునఃస్థాపనకు తమవంతు సహకారాన్ని అందించండి.

-మట్టి కృష్ణారెడ్డి

'మనుస్మృతి'ని అంగీకరించు వారికి-వ్యతిరేకించు వారికి విన్నపము

ఈ 'మనుస్మృతి'ని చదివి సత్యాసత్యాలను తెలుసుకోండి-సత్యం వైపు నిలవండి. ధర్మాన్ని నిలబెట్టండి. దీన్ని ఆమూలాగ్రం చదివిన **తర్వాత కూడా వ్యతిరేకించువారు చర్చకు రావచ్చు. నేడు 'మనుస్మృతి'పై జరుగుతున్న దుష్ప్రచారానికి ప్రధాన కారణాలు నాలుగు (4)**

1. మనుస్మృతిలో ప్రక్షిప్తాలు చేరడం. 2. మహర్షి మనువు యొక్క మూల భావాలు తెలియక పోవడం.

3. 'మనుస్మృతి'లోని పూర్వాపరాలను ఆలోచించకుండా వ్యతిరేకించడం.

'వేదోఽఖిలో ధర్మమూలమ్' 'వేదం సమస్త **ధర్మాలకు మూల**'మని చెప్పిన **'మనుస్మృతి'** వేద సిద్ధాంతాలపై రచించబడింది. 'మను స్మృతి'ని విమర్శించడం, దహించడమంటే వేద సిద్ధాంతాలను దహించి వేయడమే. అలా చేయుట విజ్ఞుల పని కాదు. శరీరంలో విషం ప్రవేశిస్తే దాని తీసి వేసే ప్రయత్నమే చేయాలి కాని మొత్తం శరీరాన్నే దహించి వేయ కూడదు. అలాంటి గతే 'మనుస్మృతి'కి పట్టింది. మధ్యకాలంలో కొందరు స్వార్థ పరులు అందులో ప్రక్షిప్తాలను చొప్పించి ధర్మ శాస్త్రాన్ని తమకు అనుకూలంగా మలచు కున్నారు. ఈ ప్రక్షిప్త శ్లోకాలే దీని వ్యతిరేకతకు కారణమైనవి. కావున వీటిని శాస్త్రీయంగా, తర్కబద్ధమైన ప్రమాణాలతో తొలగించడం జరిగినది.

'మనుస్మృతి'లో అసలైన మూల శ్లోకాలు 1227. ప్రక్షిప్తాలు 1458. మొత్తం కలిసి నేటి 'మనుస్మృతి'లో 2685 శ్లోకాలు. ఇందులో ప్రక్షిప్తమైన 1458 శ్లోకాలను ఆధారంగాచేసుకొని వాటిని చదివి కొందరు మనుస్మృతిని సమూలంగా విమర్శిస్తున్నారు. కాలుస్తున్నారు. ఈ ప్రక్షిప్తాలతో కూడిన మనుస్మృతిని నేను చదివినప్పుడు నాకు కూడా "దీన్ని తగల బెట్టాల్సిందే" అనిపిం చింది. ఎందుకంటే నేను కూడా నేటి కుల వ్యవస్థలో పుట్టుకతో **'శూద్రుడను'** కనుక. నా అదృష్టం కొద్దీ ఆర్య సమాజంలో చేరడం- **మహర్షి** దయానంద సరస్వతి దయతో మా గురువు **'గోపదేవ శాస్త్రి దర్శనాచార్యుల'** (వీరు కూడా జన్మతః శూద్రులే) దగ్గర వేదాది శాస్త్రాలను చదవడం జరిగింది. గురువు గారి దగ్గర **'సత్యార్థ ప్రకాశం, ఋగ్వేదాది భాష్య భూమికా'**ది గ్రంథాలను చదవడం వల్ల **'మను స్మృతి'**లో అనేక ప్రక్షిప్తాలు చేరినవన్న విషయం తెలిసింది. ఈ ప్రక్షిప్తాల వలననే ఇది నిరాదరణకు గురైందని అర్థమైంది. దయానంద సరస్వతి వేదాల తర్వాత **'మను స్మృతి'** యే వేదానుకూలమైనదని ఇందులో చేరిన ప్రక్షిప్తాలను తొలగిస్తేనే నేడు శూద్రు లుగా పరిగణింపబడుతున్న దళిత నిమ్నవర్గం, జనాభాలో సగభాగమైన స్త్రీ వర్గం ఉద్ధరింప బడుతుందని, బ్రాహ్మణులమని చెప్పుకుంటు న్నవారు వేదానుకూలంగా, మనుధర్మానుసా రంగా నడవకపోవడమే గాక తద్విరుద్ధంగా వ్యవహరిస్తున్నారని, సత్యార్థ ప్రకాశం మొ॥ తమ గ్రంథాలలో ప్రవచనాలలో అనేక ప్రమా ణాలతో నిరూపిస్తూ, ప్రక్షిప్తరహిత **'మను స్మృతి'**ని జనబాహుళ్యం లోనికి తెచ్చినప్పుడే అన్ని వర్ణాల వారూ, అన్ని వర్గాల వారూ ధర్మబద్ధంగా, న్యాయానుకూలంగా, చట్ట ప్రకారంగా జీవించగలుగుతారని, అప్పుడే సమాజం సర్వతోముఖాభివృద్ధి చెందుతుందని మనుస్మృతి పునరుద్ధరణ తప్పనిసరని ప్రక టించారు. నేను వేదశాస్త్రాలను చదివిన తర్వాత ద్విజుడనయ్యాను. నిత్యం పంచమహా యజ్ఞాలను ఆచరిస్తున్నాను.

నేడు 'శూద్రులనబడుతున్న వారందరు కూడా' ఈ ధర్మశాస్త్రాన్ని చదివి దీని ప్రకారమే మెలుగుతూ ఉంటే బ్రాహ్మణ, క్షత్రియ, వైశ్య వర్ణాలను పొంది ద్విజులుగా గుర్తింపు పొంద గలరు. చేస్తున్న కర్మయే వర్ణాన్ని తెలుపుతుంది శూద్రులని, దళితులని చెప్పబడుతున్న అలా అనుకుంటున్న వారిలో ఎంతో మంది బ్రాహ్మణ క్షత్రియ వైశ్యులున్నారు. ఉదా : అన్ని రకాల విద్యాలయాలలో (చిన్న-పెద్ద) విద్యను బోధిస్తు వారందరూ **'బ్రాహ్మణులు'**, ప్రభుత్వ నిర్వహణలో పనిచేస్తున్న ఐ.ఎ.ఎస్., ఐ.పి.ఎస్.లు, చిన్న-పెద్ద రాజకీయ నాయ కులు **'క్షత్రియులు'**, స్వంతంగా చిన్న పెద్ద వ్యాపారాలు, వ్యవసాయం, పశు పాలన మొ॥ చేస్తున్న వారందరూ **'వైశ్యులు'**. పై వారందరికీ సహకరిస్తూ చిన్న-పెద్ద ఉ ద్యోగాలు (కూలీ- జీతం) చేస్తున్న వారందరూ శూద్రులు ఇదే నాటి-నేటి వర్ణ వ్యవస్థ. దీన్ని దృష్టిలో పెట్టు కుని ఏ కులం వారైనా-ఏ మతం వారైనా మీరు చేస్తున్న వృత్తిని పట్టి మీడి వర్ణమో మీరే నిర్ణయించుకోవచ్చు. ఇదే మనుధర్మ శాస్త్రంలో చెప్పబడిన వర్ణవ్యవస్థ.

ఇందులో కేవలం వర్ణాశ్రమ వ్యవస్థ విషయాలే కాక-వ్యక్తి, కుటుంబం సమాజం, రాజ శాసనం, దేశ నిర్మాణాది విషయాలెన్నో ఉ న్నాయి. ఇది సర్వకాల సర్వావస్థలలో **'సృష్టి ఉ న్నంతవరకు-మానవుడు భూమిపై బ్రతికు న్నంతవరకు'** ఈ ధర్మశాస్త్రానుసారం జీవి తాన్ని గడపవలసిందే. ఎవరు అంగీకరించినా అంగీకరించక పోయినా ఇదే సత్యం. ఇదే ధర్మం. అప్పుడే అతడు శారీరక, మానసిక, బౌద్ధిక, ఆత్మిక, పారలౌకిక అభివృద్ధిలను సాధించగలుగుతాడు. లేనిచో నేటి సమా జంలో ప్రపంచమంతా జీవిస్తున్నట్లుగానే. అంటే భోగలాలసులై, విలాసాలతో, వినోదా లతో, శారీరిక వాంఛలతో, మధ్య మాంసాది దుర్వ్యసనాలతో, డబ్బు, అధికారం, విచ్చల విడితనం మొదలగు దుర్గుణాలతో ఎందుకు బ్రతుకుతున్నామో తెలియక, ఎలా బ్రతకాలో తెలియక అనేక శారీరక, మానసిక రోగాలతో కేవలం బ్రతకడానికే బ్రతికేస్తున్నారు. చావలేక బ్రతుకుతూ చస్తున్నారు.

నేడు ధర్మబద్ధమైన జీవన విధానం లేక, న్యాయబద్ధమైన వ్యవస్థ లేక, బడులలో ఈ విషయాలు తెలుపక, పాలకులకు, పెద్దలకు తెలియక, అన్ని రంగాలూ అస్తవ్యవస్తమై, అయోమయమై సర్వం అభద్రతా భయంతో అతలాకుతలమైపోతున్నది సమాజం.

అందుకే మరల పునాది నుండి ఈ సమాజ భవనం నిర్మాణం కావాలి. ఈ నడు స్తున్న కుళ్ళిన వ్యవస్థలనన్నీ కూల ద్రోయాలి. వ్యక్తి నిర్మాణంతోనే కుటుంబం, సమాజం, దేశం నిర్మాణమౌతుంది. కనుక మన ప్రాచీన ఋషులు చెప్పిన ధర్మశాస్త్రానుసారంగా మాన వుని నిర్మాణం జరగాలి. అందుకే ఈ **'మను స్మృతి-'మనుధర్మశాస్త్రం'** పునరుద్ధరణ. ఈ సర్వతోముఖ, సర్వోన్నత వ్యవస్థా గత నిర్మాణ కార్యంలో మేధావులైన వారూ, అన్ని రంగాల వారూ, అన్ని వర్గాల, వర్ణాల-కులాల వారూ ప్రతి ఒక్కరు ఈ ధర్మస్థాపనలో భాగస్వాములు కావాలి.

ఈ 'మనుస్మృతి'లో ఏమున్నది? దీన్ని ఎందుకు చదవాలి?

'మనుస్మృతి' యొక్క గొప్పతనం-దీని ఆవశ్యకత తెలియాలంటే-ఇందులోని విషయ సూచికను ఆమూలాగ్రం చదవాలి. అప్పుడే ఈ గ్రంథం యొక్క గొప్పతనమేంటో తెలు స్తుంది. ఇదివ్యక్తి జీవితోన్నతికే కాక నమస్త విశ్వమానవాళి శ్రేయస్సుకు ఉపకరిస్తుంది. మానవ సమాజాన్ని సంయమనంలో ఉంచు తుంది. విశ్వశాంతిని శాశ్వతంగా నిలుపు తుంది. ఈ విషయ సూచికను దీని సమగ్ర సంపూర్ణ స్వరూపం మీకు తెలియడానికే అంది స్తున్నాను. ఈ ధర్మ గ్రంథాన్ని సంపాదించు కొని మీ జీవితాన్ని ధర్మమార్గంలో నడిపిం చండి. మీ గృహాన్ని వేదా (దేవా)లయంగా మార్చుకోండి.

ఈ గ్రంథాన్ని ఆమూలాగ్రం చదివి జీవి తాన్ని, సమాజాన్ని చక్కదిద్దండి. ఏవైనా లోటుపాటులుంటే తెలియజేయండి. అందరం కలిసి ధర్మబద్ధులమై (సర్వమాన సమ) ధర్మ స్థాపనతో సమసమాజ నిర్మాణం చేద్దాం. రండి కదలిరండి. గ్రహణం వీడిన సూర్యు డిలా ప్రక్షిప్తాల ప్రక్షాళనతో ఈ **'మనుస్మృతి'** అసలైన, నిజమైన, శాశ్వతమైన, యథార్థమైన **'ధర్మశాస్త్రం'**గా వెలువడుతోంది. ఈ వెలు గులో మీజీవన ప్రయాణాన్ని సాగించండి. మోక్ష-గమ్యాన్ని చేరండి.

మీకు సర్వాంతర్యామి, సర్వవ్యాపకుడు, సచ్చిదానంద స్వరూపుడు, నిరాకారుడైన సర్వే శ్వరుడు సద్బుద్ధిని ప్రసాదించుగాక! ధర్మ బుద్ధిని ప్రేరేపించునుగాక!

ఈ మహద్గ్రంథాన్ని చదివిన తరువాత కూడా సందేహాల నివృత్తి జరగనిచో చర్చకు రండి. సత్యమేదో తేలుద్దాం.

'సత్యమేవ జయతే-ధర్మో రక్షతి రక్షితః'

-మల్లీ కృష్ణారెడ్డి

సమర్థన-337, పూలర్ చేసిన ప్రక్షిప్తాల ఆరోపణ నిరాధారం-342, ధర్మానికి 4 లక్ష ణాలు, వాటి స్వరూపం-343, వేదం 343, స్మృతి మరియు శీలములు-343, 'సాంత రాళానం' శబ్దానికి సరియైన అర్థం-352, పారంపర్యక్రమం యొక్క అభిప్రాయం-353. ప్రామాణిక దేశపటము-చిత్రవివరణ-355, ఆర్యా వర్తంలోని ప్రాంతాలు లేదా జనప దాలు-355, 142వ శ్లోకానికి సరియైన అర్థం-358, మ్లేచ్ఛశబ్దాభిప్రాయం-358, మనుస్మృతిలో అధ్యాయ విభజన మౌలికం కాదు-360, మనుస్మృతిలో వర్ణాలు, ఆశ్ర మాలను గురించి ఒకే చోట వర్ణన-361.

ద్వితీయాధ్యాయము : సంస్కారాల ఉద్దేశ్యం-363, సంస్కారాల అనుష్ఠానం బాలబాలిక లందరికీ అవసరం-363, శూద్రులకు సంస్కారాలు నిషేధం కావు-364, 'గార్భైః' మొదలైన పదాలలోని అర్థ వ్యాప్తి-365, మనుస్మృతి షోడశ (పదహారు) సంస్కారాలు-365 'ఏనః' శబ్దానికే అర్థం-367, వర్ధనశబ్ద వివేచనం-369, జాతకర్మకు గృహ్యసూత్ర ప్రమాణాలు-369, గృహ్యసూత్రాలలో నామ కరణ ప్రమాణాలు-370, 6, 7 శ్లోకాల అర్థం -371, 'జుగుప్సిత' శబ్దానికి అర్థం-372, నిష్క్రమణ, అన్న ప్రాశనాలకు ప్రమాణాలు-373, బ్రాహ్మణాది పదాలకు మనుసమ్మత మైన అర్థం-375, ఉపనయన ప్రసంగంలో శూద్రవర్ణాన్ని గురించిన ప్రస్తావన ఎందుకు లేదు ? -375, ఎంగిలి తినడం దోషం- 383, తెగిపోయిన యజ్ఞోపవీతం మొదలగు వాటిని నీటిలో ఎందుకు వేయాలి ? -386, స్త్రీలకు వేదాధ్యయనం, ఉపనయనం మను సమ్మతాలు-387, స్త్రీల వేదాధ్యయనం-వేదా లో ప్రమాణాలు-388, అధ్యయన అద్యం తాలలో చేయు ఓంకారోచ్చారణ వల్ల కలుగు లాభాలు-392, ఇందుకు యోగదర్శన ప్రమా ణాలు-392, ఓంకారం మహా వ్యాహృతుల వివేచనం-393, ఇంద్రియ శబ్దోత్పత్తి-399, చరకశాస్త్రంలో ఇంద్రియాల విషయం-400, వషట్ కారమునకు ఉత్పత్తి-406, స్వాధ్యా యం యొక్క అభిప్రాయం-407, 'అబ్ద' శబ్దా నికి సరియైన అర్థం-407, 'స్వాధ్యాయ' మంటే-408, ఆప్త శబ్దానికి అర్థం-408, నిరుక్తంలో విద్యా కథ-411, నమస్కారం చేయడం వల్ల-411, ఆయుర్విద్యా యశో బలం ఎలా అభివృద్ధి-చెందుతాయి ? -414, విశిష్ట విద్వాంసుడు సర్వాధికమా న్యుడు-421, కల్పమంటే ఏమిటి ? -422, 'ఋత్విక్' కావడానికి ఎవడు అధికారి ? -423, బ్రహ్మజన్మ అంటే ఏమిటి ? -425, 'జాతి' శబ్దార్థ వివేచనం-426, 'జాతి' శబ్దానికి అర్థం-426, 'కవి' శబ్దోత్పత్తి-427, అనూచానుడు అందరికంటే గొప్ప వాడు -429, అవమానాన్ని సహించమని ఎందుకు చెప్పినట్లు ? -432, 'స్రగ్వీ' శబ్దాన్ని గురించి -434, వేదాన్ని చదవ 'బ్రహ్మచారి' శబ్ద వ్యుత్పత్తి-437, బ్రహ్మచారికి పెద్దలెవరు ? -438, పితృయజ్ఞం ఎవరుచేయాలి ? -438, 'దేవతా భ్యర్చనము' గూర్చి-438, తర్పణానికి సరియైన అభిప్రాయం-439, "మధు" శబ్దం-అర్థం-440, యజ్ఞసమిధలు -444

తృతీయాధ్యాయము : సమావర్తనమంటే ఏమిటి ? -465, సమావర్తన కాలం- అందుకు సంబంధించిన నియమాలు-465, వివాహమనగా ? -466, వివాహానికి వయో నియమం-467, స్త్రీలకు వివాహ వయస్సు -467, ఆయుర్వేద శాస్త్రంలో వివాహ వయస్సు-468, వేదంలో గల వివాహ వయస్సు-468, మనుస్మృతి నాలుగు వర్ణాల గురించి-469 వివాహాలలో నిషిద్ధ...... -471.8 విధాల వివాహాలపై మనువు అభి ప్రాయం-475 బ్రహ్మ వివాహ లక్షణం- 478, బ్రహ్మ వివాహమే స్వయంవరం వివాహం-478, దైవ వివాహ లక్షణం-సృష్టి కరణ-478, 'దేవ' శబ్దానికి అర్థం-సాత్త్విక ప్రవృత్తి గల విద్వాంసుల దేవతలు-478 'ఋత్విక్' శబ్దానికి ప్రసంగాను కూలమైన అర్థం-479, అర్థ వివాహ-వివాద-పరిశీలన -479, ఆర్ష వివాహ లక్షణం-438 ఋషి అంటే ఎవరు ? -480 ప్రాజాపత్య వివాహ లక్షణం పరిశీలన-480, 'ప్రజాపతి' అని వివరించారు ? -481 అసుర వివాహ లక్షణం-పరిశీలన-481, గాంధర్వ వివాహ లక్షణం-పరిశీలన-482 గంధర్వులెవరు ? -482 రాక్షస వివాహ లక్షణం-పరిశీలన -482, గంధర్వులెవరు ? -482, రాక్షస వివాహ లక్షణం-పరిశీలన-483 రాక్షసుడె వడు ? -483, పైశాచిక వివాహ లక్షణం -483, పిశాచిలెవరు ? -484, ఋతు కాలంలో వర్జిత పర్వములు-468 పర్వదినా లలో సమాగమం నిషేధం దేనికి ? -488, 'ఋతుకాలగమనం' గృహస్థుడికి తప్పనిసరి కర్తవ్యం-488, ఋతుగమనంలో నిషిద్ధదా త్రులు-489, 'అధికశబ్ద' వివరణ-490, ఆధునిక-చికిత్సా-విజ్ఞానానికి వ్యతిరేకం కాదు-490, గృహస్థ బ్రహ్మచారి ఎవరు ? -491, స్త్రీ ధన వివరణ-492, ఆర్ష వివాహంలో శుల్కం తీసుకోవడం-493, 56వ శ్లోకానికి సరియైన అర్థం-494, స్వర్గమంటే ఏది ? -502 పెతరశబ్ద పరిశీ లన-505, పితరుల సంబంధంగా వేద ప్రమాణం-505, పితరుల గణన-వారి అభి ప్రాయం-506, 'దేవ' శబ్ద పరిశీలన-507, ఋషి శబ్ద పరిశీలన-508, యజ్ఞంలో లవణయుక్త ఆహార పదార్థాన్ని వేయరాదు -510, అతిథి తన కులగోత్రాలు చెప్పరాదు -519, 'ఎవరిని అతిథిగా భావించకూడదు ?' -520, గృహ్యదేవతలు-522, యజ్ఞశేషానికి శేష భుక్తభోజనానికీ తేడా ఏమిటి ?-549

చతుర్థాధ్యాయము : హవ్యకవ్య శబ్దాల వివేచనం-562 దీర్ఘకాల.....వల్ల దీర్ఘాయుష్మ ప్రాప్తి-578, యోగదర్శనం ద్వారా బహ్మం తర జ్ఞాన సమర్థన-591, కర్మఫల భోక్త ఎవరు ? -598, ధర్మవర్జిత అర్థం-600, ధర్మవర్జితకామం-600, ఉత్తర కాలంలో సుఖం లేని ధర్మం-600, లోక విక్రుష్ట ధర్మం -600, ధర్మార్థకామ స్వరూపం-600, దాన ప్రాణానికి సంబంధించిన ధర్మవిధి-603, యమాలను ఆచరించనందువల్ల పతనం -609, యమ నియమాలేవి ? -609, కర్తే కర్మఫలభోక్త-619, బ్రాహ్మణ శబ్దాభి ప్రాయం-621.

పంచమాధ్యాయము : గృంజన మంటే 'శల్గం' -628 చెప్పిన పదార్థాలు అభక్ష్యం-తినదగ నివి-కావటానికి కారణం-629, యజ్ఞపా త్రల పరిచయం-వివరణ-655, స్త్రీల విష యంలో మనువుకున్న గౌరవం -663, మనువు చెప్పిన స్త్రీ సంబంధ విధానాలు -664, 'సంస్థిత' శబ్ద వివేచనం-666.

షష్ఠాధ్యాయము : వానప్రస్థధారణమునకు-బ్రాహ్మణముల-గ్రంథాలు ప్రమాణాలు -673, 26వ శ్లోకానికి వివరణ -683, వానప్రస్థాశ్రమం నుండి సన్యాసాశ్రమం-స్వీక రించడానికి సామాన్య పద్ధతి -687, సన్యాసి ద్వారా అభయ ప్రదానం -688, 'అనగ్నిః' అనగా-690, కాలప్రతీక్ష ఎలా చేయాలి ?

-691, ఇంద్రియ నిరోధానికి యోగశాస్త్ర ప్రమాణం-696, యోగ పరిభాష-698, ప్రాణాయామవిధి-లక్షణం-700, ప్రాణాయామ లక్షణం-700, ప్రాణాయామంలో ముఖ్యంగా మూడు భేదాలు-701, ప్రాణాయామ మంత్రం-701, ప్రాణాయామం వల్ల దోషనివారణ-702, ధారణ, ప్రత్యాహార వివేచనంలో యోగప్రమాణం-703, ధ్యానయోగ నివేదన-704, మోక్ష సుఖానికి ఆశ్రయం పరమాత్మ-708, ఋషి దయానంద భాష్యం -ధర్మ లక్షణాల విశేష వ్యాఖ్య-711, బ్రాహ్మణ శబ్ద ఉపలక్షణాత్మక ప్రయోగము -714.

సప్తమాధ్యాయము : రాజుకు ఉండవలసిన విశిష్ట గుణాలు-716, అలంకారికంగా దండన గురించి వర్ణన-724, ధర్మ స్వభావం -725 'నిషమః' అను పదానికర్థం-727, వర్ణాశ్రమ ధర్మాలను రక్షించడం రాజు కర్తవ్యం -730 'భృత్యులంటే ఎవరు ?' -730, రాజు యొక్క జీవనచర్య -731, 37వ శ్లోకార్థ వివరణ-731, రాజు-దినచర్య, కౌటిల్యుడి అర్థశాస్త్రం-731, రాజు యొక్క అనుశాసన విషయంలో కౌటిల్యుడి అభిప్రాయం-733, 'త్రయీ విద్యా' అనగా-734, ఇంద్రియాలను జయించడం గురించి కౌటిల్యుడి అభిప్రాయం -735, 'తౌర్యత్రికమ్, మృగయా స్త్రియః' శబ్దాల మీద విశేష నివరణ-737, నియుక్తికి ముందు అమాత్యుల పరీక్షావిధి-740, షడ్ గుణాల విస్తృతవర్ణన-742, రాజు-అమాత్యుల మధ్యకార్య విభజన-745, కౌటిల్యుని అర్థశాస్త్రానుసారంగా విభాగాధ్యక్షులు-753, విపశ్చిత్ శబ్దానికి అర్థం-754, 'ఛిద్ర' శబ్ద వ్యుత్పత్తి కోసం-762, ఛిద్రమంటే-763, కౌటీల్యుడి ద్వారా ఉద్ధృత శ్లోకం-763, "పరిపన్థిన్" శబ్దానికి అర్థం-764, రాష్ట్ర కర్షణమంటే-766, రాజ్య సంరక్షణ కోసం మనుప్రోక్తమైన-నియంత్రణ కేంద్ర వ్యవస్థా సూచిక-768, 'కులం' అర్థం-769, మంత్రుల, సేవకుల భరణ, పోషణ వ్యవస్థ -773, మనువు సూచించిన పన్ను విధానం -776, 'బ్రహ్మణాన్ అర్చ్య' అను శబ్దానికర్థం -780, మనుప్రోక్తమైన రాజు దినచర్య -781, కౌటిల్య ప్రోక్తమైన రాజు దినచర్య -782, "నిఃశలాకే అరణ్యే" -783, "మస్త్ర" శబ్దానికి రాజనీతి పరమైన అర్థం-783, రాజు, ధర్మ-కామ-అర్థాలను గురించి ఆలోచన చేయడం-785, అష్టవిధకర్మల వివాదా నికి సమాధానం-786, మనుప్రోక్తమైన రాజు యొక్క అష్టవిధ కర్తవ్యాలు-787, రాజు కర్తవ్యాలు ఎనిమిది-787, పంచవర్గమంటే ఏమిటి ? -788, అనురాగం, అవరాగం -789, మండలం-789, మధ్యమాది నాలుగు మూల ప్రకృతి రూపమైన-రాజుల లక్షణాలు-789, అష్టమూల ప్రకృతుల రాజుల లక్షణాలు-790, 72 ప్రకృతులు -791, షడ్గుణాల వివరణ-793, త్రివిధ మార్గాలను నంశోధించాలి-801, వివిధ వ్యూహాల పరిచయము-802, మనుప్రోక్తమైన యుద్ధనీతి మరియు తదంగ ప్రత్యంగాలు (పట్టిక)-805, యుద్ధవ్యూహ రచన-శస్త్రాస్త్ర నంకేత వర్ణన-805, కాలజ్ఞ శబ్దానికి మనుసమ్మతమైన అర్థం-814, విషావహైః మన్త్రైః-815, కౌటిల్యుడి అర్థశాస్త్రంలో ప్రభు వుకు భోజన సంబంధమైన నిర్దేశం-815, కౌటిల్యుని యానాది ప్రయోగవిధి-816, "స్త్రీభిః" పదానికి అభిప్రాయం-817, 226 శ్లోకవర్ణనను గురించి ఆలోచన-820, భృత్య శబ్దార్థాన్ని గురించిన ఆలోచన-820

అష్టమాధ్యాయము : మంత్రజ్ఞులు, బ్రాహ్మ ణులు అంటే ఎవరు ? -821, వినీతుడంటే ఎవరు ? -821, "అధర్మ" శబ్దం యొక్క అభిప్రాయం-829, సాక్షి శబ్దాన్ని గురించి పరిశీలన-844, సాక్షివిశేష కథనానికి-అభిప్రాయం-846, సాహస దండం-వాటి ప్రమాణం-861, తూచే ప్రమాణాల వివేచన -పట్టిక-866, రామాయణంలో ఉదాహరింవబడిన మనున్మృతి శ్లోకాలు-921, దౌర్జన్యం-చౌర్య-వీటి లక్షణం-926.

నవమాధ్యాయము : 'జాయా' శబ్ద నిర్వచనం -953, నియోగవిధి-968 నియోగంలో ఏ ఏ విషయాలుంటాయి ? -968, దేవర శబ్దా నికి అర్థం-968, వేదాలలో నియోగ విధాన్-968, ప్రతి ధర్మ కార్యాన్ని భార్యతే కలిసి చేయాలి-981, ఉద్ధారభాగ విభజనం -987, ఉద్ధారభాగ విధానమెందుకు ? -987, 'స్వధా' శబ్దానికి మను సమ్మతమైన అర్థం-991, పుత్రికాధర్మం-992, పుత్రీ- పుత్రులు ఆత్మరూపములు-993, జూదం వల్ల నష్టం-1018, వేదాలలో జూదనిషేధం -1018, 'కుశీలవ' శబ్దానికి అర్థం-1019, 'త్రిదివంయాన్తి' ఇదొక నుడికారం-1027, 'తస్కర' శబ్ద వ్యుత్పత్తి-1027, 'ఔపిధిక' శబ్దార్థం-1028, హితా శబ్దానికి 'నది' అని అర్థం-1033, 'వరుణపాశ శబ్దానికి' అర్థం -1044, నవమాధ్యాయ విభాగ నిర్ణయం -1048.

దశమాధ్యాయము : శూద్రుడు ఉత్కృష్ట వర్ణమును పొందుట-1052, వర్ణములు నాలుగు -1055, నాలుగు వర్ణాలకు శాస్త్రీయ ప్రమాణాలు-1055, దస్యు శబ్దం యొక్క అభిప్రాయం-1064, అనార్యుడు, అతని లక్షణం -1067, కర్మణా వర్ణవ్యవస్థకు అతిస్పష్టమైన ఉదాహరణం-1070, ఈ 65వ శ్లోకానికి నంబంధించిన ప్రమాణాలు-1070, వర్ణ పరివర్తనానికి ఉదాహరణ-1071.

ఏకాదశాధ్యాయము : ప్రాయశ్చిత్త శబ్దానికి అర్థం, ఉద్దేశం-1096, యోగదర్శనంలో "కృచ్ఛ" మొ॥ వ్రతముల-1130, ఉద్దేశం- మహా వ్యాహృతియుక్త హోమమంత్రాలు -1134, పవిత్రాకారక మంత్రాలు-1134, ప్రాయశ్చిత్తంతో పాపాలు కాదు-పాప భావన తొలగుతుంది-1137, అపత్కాలంలో దానం ద్వారా పాపభావన నుండి ముక్తి గురించిన వివేచన-1137, త్రయీ విద్యా వర్ణన-1147

ద్వాదశాధ్యాయము : 48వ శ్లోకానికి ప్రచలితమైన అర్థం-సరియైనది కాదు-1163, 49వ శ్లోకానికి ప్రచలితమైన అర్థంలో అశుద్ధి-1163, 50వ శ్లోకానికి 'అసంగతమైన' అర్థం-1164, ఈ శ్లోకంలో పారభేదం ప్రక్షిప్తం-1172, "స్వారాజ్యమ్" శబ్దానికి అర్థం-1175, ఆత్మ శబ్దోత్పత్తి-దాని అర్థం -1176, "అర్వాక్ కాలం" అనగా-1177, వేదశాస్త్రవిత్ అర్హతి-1179, పాపభావనా వినాశం-1181, అమృత శబ్దానికి అర్థం -1181, ప్రత్యక్ష ప్రమాణం-1182, అనుమాన ప్రమాణం-1182, తర్కమంటే అభిప్రాయమేమిటి ?-1183, జాతి శబ్దార్థం -1187, మూర్ఖులు నిర్ణయించిన ధర్మం వల్ల హాని-1188, సర్వజ్ఞుడైన పరమాత్మ యొక్క అనుభవజ్ఞానంతో అధర్మ నివృత్తి-1189, పరమాత్మే సర్వదేవతలకు దేవత-1191, పరమాత్మ స్వరూపం గుణకర్మల వర్ణన -1191, ఈ 122 శ్లోకానికి వేదమంత్రాలతో పోలిక-1191, పరమాత్మ యొక్క గౌణ నామాలు-వాటి అర్థాలు-1192, 124 శ్లోకానికి అన్యత్ర వర్ణన-1194, ఉపర్యుక్త స్వరూపం గల పరమాత్మ జగదుత్పత్తి -1194, సర్వప్రాణులలో ఆత్మవత్ భావన, పరమాత్మ-దర్శనంతో ముక్తి -1195.

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-02-2023 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya,M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040 24760030.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ.

To,

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के प्रतिमा का अनावरण

दिनांक २३ जनवरी २०२३ सोमवार के दिन जोगुलाम्बा जिले के अल्लमपुर गाँव में सभा के प्रधान श्री विट्ठल राव आर्य जी के द्वारा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा का अनावरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । अल्लमपुर गाँव के टी.आर.एस. पर्टा के प्रमुख नेता श्री वेंकट रामय्या शेट्टी जी जो कि पढाई के समय प्रधान जी के शिष्य रहे है । उनके सतत प्रयास से प्रतिमा स्थापित की गई है । अनावरण के पश्चात् सभा को श्री विट्ठल राव जी ने अपने सम्बोधन में नेताजी के विषय में अपने अमूल्य विचार रखे । नेताजी का प्रमुख नारा जो प्रसिद्ध है, ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आज़ादी दूँगा ।'' इस पर प्रधान जी ने अपने गरीमामय विचार प्रकट किए । कार्यक्रम में जिले के पूर्व एम.पी. और वर्तमान एम.एल.ए., जेड़.पी.टी.सी. के चेयरमेन तथा अन्य गणमान्य नेता तथा पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे । तथा गाँव के बहुत लोग तथा पाठाशालाओं के विद्यार्थी उपस्थित थे । कार्यक्रम में मध्य में प्रतिमा अनावरण कमीटी के अध्यक्ष द्वारा सभा प्रधान श्री विट्ठल राव जी का बड़े ही भक्तिभाव से शॉल, टोपी, मोमेन्टों और पुष्पमाला से सम्मान किया गया । उसी प्रकार सभा के कोषाध्यक्ष श्री जोन्नल बसीरेड्डी जी का भी उसी तन्मयता से सम्मान किया गया ।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र.- तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. Narendra Bhavan Ph : 040 24760030.